Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 42

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

14 रबीय्युल अव्वल 1442 हिज्री कमरी 21 इख़ा 1400 हिज्री शम्सी 21 अक्तूबर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

मांगने की मनाही और इस का अज़ाब

(1473) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे वज़ीफ़ा देते तो मैं कहता : आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन को दीजिए जो मुझ से ज़्यादा उसके मुहताज हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते : इस माल में से जब कुछ तुम्हारे पास आए तो उसे ऐसी हालत में ले लो जबकि तुम न इच्छा रखते हो और न मांगनेव वाले हो और जो न मिले तो अपने नफ़स को उस के पीछे मत लगाओ।

(1474) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : आदमी हमेशा लोगों से मांगता रहता है, यहां तक कि क़ियामत के दिन वह ऐसी हालत में आएगा कि इस के मुँह पर गोश्त की बोटी भी न होगी।

(बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

सिद्दीक अतिश्योक्ति की विभक्ति है अर्थात जो सम्पूर्ण रूप से सच्चाई में लीन हो और उच्च स्तर का सच्चाई का पाबन्द हो और सच्चा आशिक़ हो

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आँहज़रत के मार्ग को हरगिज़ न छोड़ो

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राह को तो न छोड़ो। मैं देखता हूँ कि विभन्नि क़िस्म के वज़ीफ़े लोगों ने आविष्कार कर लिए हैं। उल्टे सीधे लटकते हैं और जोगियों की तरह राहिबाना तरीक़े धारण किए जाते हैं,परन्तु ये सब लाभ रहित हैं। अंबिया अलैहिमुस्सालम की यह सुन्नत नहीं कि वे उल्टे सीधे लटकते रहें या नफ़ी इस्बात (ला एवं हू अनुवादक) के ज़िक्र करें और अर्राह के ज़िक्र करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसी लिए अल्लाह तआला ने सर्वोत्तम आदर्श फ़रमाया لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (अल्अहज़ाब :22) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नक़श-ए-क़दम पर चलो एक ज़रा भर भी इधर या उधर होने की कोशिश न करो

जमाअत अहमदिया के स्थापना का उद्देश्य

अत: इनाम पाने वाले लोगों में जो कमाल हैं और صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ(अल्फ़ातिह:7) में जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला ने इशारा फ़रमाया है उनको प्राप्त करना हर इन्सान का मूल लक्ष्य है और हमारी जमाअत को विशेषत: इस तरफ़ ध्यान देना चाहिए,क्योंकि अल्लाह तआला ने इस सिलसिला के स्थापना करने से यही चाहा है कि वह ऐसी जमाअत तैयार करे जैसी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तैयार की थी ताकि इस आख़री ज़माना में यह जमाअत क़ुरआन शरीफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई और महानता पर गवाह के रूप में ठहरे।

नबुव्वत का स्थान

उन कमालों में से जो मुनइम अलैहिम (इनाम पाने वालों) को दिए जाते हैं। पहला कमाल नबुव्वत का कमाल है। जो बहुत ही उच्च स्थान पर स्थित है। हमें अफ़सोस है कि वे शब्द नहीं मिलते जिनमें इस कमाल की वास्तविकता वर्णन कर सकें। यह नियम की बात है कि जितनी कोई चीज़ उच्च हो उसके वर्णन करने के लिए उतने शब्द कमज़ोर होते हैं और नबुव्वत तो ऐसा स्थान है कि इन्सान के लिए इससे बढ़कर और कोई दर्जा और मर्तबा नहीं है,तो यह फिर कैसे वर्णन हो सके। साराक्षं और अपर्याप्त रूप से पर हम यूं कह सकते हैं कि इन्सान जब सांसारिक ज़िन्दगी को छोड़ देता है और बिलकुल साँप की केंचुली की तरह इस ज़िन्दगी से अलग हो जाता है। उस वक़्त उसकी हालत दूसरी हो जाती है। वह ज़ाहिर में इसी ज़मीन पर

शेष पृष्ठ 10 पर

हश्र के अर्थ जमा करने के हैं और यह मृत्यु के बाद जीवित करने के लिए इसलिए इस्तिमाल किया जाता है कि उस दिन अगले पिछले सब इन्सानों को जमा किया जाएगा। हश्र उस इजतिमा के लिए भी बोला जाता है जो नबियों के द्वारा से इस दुनिया में होता है, कोई नबी नहीं आया जिसके माध्यम से हश्र न हुआ हो। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में देखो कैसा हश्र हुआ कि मुख़्तलिफ़ विचारों के लोगों को एक कलिमा पर जमा कर दिया गया

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूर: हिजर आयत : 26 وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ और निश्चित रूर से तेरा रब ही उन्हें जमा करेगा। वह निश्चित रूर से हिक्मत वाला (और बहुत जानने वाला है) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

हश्र के अर्थ जमा करने के हैं और हश्र इन्ही अर्थों की दृष्टि से मृत्यु के बाद जीवित करने के लिए इस्तिमाल किया जाता है क्योंकि उस दिन अगले पिछले सब इन्सानों को जमा किया जाएगा। हश्र का शब्द उस इजतिमा के लिए भी बोला जाता है जो नबियों के द्वारा से इस दुनिया में होता है अर्थात सारी क़ौम को इख़तिलाफ़ और झगड़े से निकाल कर वहदत की रस्सी में पिरो दिया जाता है। कोई नबी नहीं आया जिसके माध्यम से हश्र न हुआ हो। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम के ज़माना में देखो कैसा हश्र हुआ कि मुख़्तलिफ़ विचारों के लोगों को एक कलिमा पर जमा कर दिया गया और फिर सारी दुनिया में फैला दिया गया। इस आयत में दोनों हश्र की तरफ़ इशारा है। दुनयवी हश्र की तरफ़ इस जबकि आज तेरी क़ौम तेरे ख़िलाफ़ है लेकिन एक दिन सबको तेरे हाथ पर जमा कर दिया जाएगा। हकीम और अलीम की सिफ़ात से यह बताया है कि फ़ौरी तौर पर इस लिए जमा नहीं किया गया कि यह हिक्मत के ख़िलाफ़ है। फ़ौरन लोग इसी तरह जमा हो सकते थे कि अल्लाह तआला उनके दिलों पर तसर्रुफ़ कर के उन्हें जबर के माध्यम से मुस्लमान बना देता परन्तु इस का क्या फ़ायदा था वे लोग जो इस तरह मुस्लमान होते किसी इनाम के मुस्तहिक़ नहीं होते। दूसरे उन लोगों में जो ख़ास रुहानी ताक़तें रखते हैं और नबी को उस के शुरू ज़माना में पहचान लेते हैं उन में और कमज़ोरों में कोई अंतर नहीं रहता अगर ऐसा होता तो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और अबू जहल में क्या अंतर रह जाता सब ही एक दम मुस्लमान हो जाते और दुनिया अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ाबिलियतों और अबू जहल की नालायक़ियों को जान नहीं सकती। अत: ऐसा करना हिक्मत के ख़िलाफ़ था। इस लिए ख़ुदा तआला ने जबर से काम नहीं लिया और इस का नतीजा यह निकला कि प्रतिभाशाली और नाक़िस लोगों और बिल्कुल नाक़ाबिल लोगों के हालात दुनिया को

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला

बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग 9)

सी की नज़र लग गई या मज़लूम (पीड़ित) की बद्दुआ से कोई परेशानी या तकलीफ़ पहुंची है तो क्या यह सोच शिर्क के दायरे में तो नहीं आती

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की सेवा में लिखा कि जब हम कहते हैं कि किसी की नज़र लग गई या मज़लूम (पीड़ित) की बद्दुआ से कोई परेशानी या तकलीफ़ पहुंची है तो क्या यह सोच शिर्क के दायरे में तो नहीं आती?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 7 मार्च 2018 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : नज़र लगने या मज़लूम (पीड़ित) की बद्दुआ के असर होने का शिर्क के साथ कोई सम्बन्ध नहीं क्योंकि दोनों बातों में परिणाम ख़ुदा तआला की ज़ात निकालती है न कि नज़र डालने वाला या मज़लूम (पीड़ित) ख़ुद कुछ करता है। नज़र डालने वाले की तरफ़ से तो केवल एक ग़ैर इरादी इच्छा का प्रकटन होता है या मज़लूम (पीड़ित) की दर्द से एक आह उठती है जिसे ख़ुदा तआला स्वीकार कर के परिणाम तैयार फ़रमाता है, इस लिए हर दो विषयों का शिर्क के साथ कोई सम्बन्ध नहीं विशेषता जब कि दोनों अहादीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से साबित हैं। इस लिए अहादीस में आता कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नसीहत फ़रमाई कि اتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّهَا لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللهِ حِجَابٌ(صحيح بخارى كتاب المظالم والغصب) अर्थात मज़लूम (पीड़ित) की बद्दुआ से डरो इसलिए कि उसकी बद्दुआ और अल्लाह तआला के मध्य कोई रुकावट नहीं होती। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया لُعَيْنٌ حَقٌّ وَنَهَى عَنِ الْوَشْمِ(صحيح بخارى كتاب الطب)अर्थात हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि नज़र का लग जाना हक़ तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शरीर गुदवाने से मना फ़रमाया।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की सेवा में प्रश्न भिजवाया कि क्या एक अहमदी मुस्लमान महिला के लिए अपने पांव को पर्दा से बाहर रखना जायज़ है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने अपने तिथि 3 मई 2018 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : क़ुरआन-ए-करीम ने जहां पर्दा के आदेशों वर्णन फ़रमाए हैं वहां पहले मोमिन को मर्दों का यह हुक्म दिया कि वह अपनी नज़रें नीची रखा करें। इसके बाद मोमिन महिलों के लिए पर्दे के आदेशों वर्णन फ़रमाते हुए उन्हें पहला हुक्म यही दिया कि मोमिन महिलाएं भी अपनी नज़रें नीची रखा करें और फिर उन्हें कहा कि वे अपने गिरेबानों पर अपनी ओढ़नियाँ डाल लिया करें और अपनी सुन्दरता प्रकट न किया करें और अपने पांव इस तरह न मारें कि लोगों पर वे ज़ाहिर कर दिया जाए जो महिलाएं साधारणता अपनी श्रृंगार में से छुपाती हैं।

पांव ज़मीन पर न मारने का एक अर्थ यह भी है कि यदि पांव में कोई ज़ेवर (इत्यादि) पहन हुआ है तो इस की छनकार से लोगों की तवज्जा उस महिला की तरफ़ हो सकती है और अन्य लोगों की नज़रें इस पर उठ सकती हैं जो पर्दा के हुक्म के विपरीत है।

इसी तरह यदि पांव पर मेहंदी या नेल पालिश इत्यादि लगा कर उन का सिंघार किया गया है तो ऐसे पांव ग़ैर मर्दों के लिए कशिश का माध्यम हो सकते हैं। जिसका परिणाम यह निकलेगा कि ग़ैर मर्दों की नज़रें ऐसी महिला पर उट्ठेंगी, जिससे पर्दे के आदेशों की ख़िलाफ़वरज़ी होगी। लेकिन यदि पांव पर किसी किस्म का बनाओ सिंघार नहीं किया गया तो ऐसे पांव से चूँकि कोई कशिश पैदा नहीं हो सकती है और न ही बेपर्दगी का प्रश्न पैदा होता है। इसलिए यदि उन्हें पर्दा में न भी रखा जाए तो इस में कोई हर्ज की बात नहीं।

अहादीस में भी पर्दे के बारे में विभिन्न हिदायात मिलती हैं। एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महिला के चेहरा और हाथों के अतिरिक्त उस के जिस्म के बाक़ी हिस्से के परदे का हुक्म दिया है। एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि यदि महिला के पास तेबंद न हो तो क्या वह केवल ओढ़नी और क़मीस में नमाज़ पढ़ सकती है? इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस शर्त के साथ कि उस की क़मीज़ इतनी लंबी हो कि उसके पांव की पुश्त को भी ढक दे। एक रिवायत में है कि जंग-ए-अहद के अवसर पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी ते बंद ऊपर उठा कर पानी की मशकें भर भर कर ला रही थीं और मर्दों को पानी पिला रही थीं, रावी कहते हैं कि इस हालत में उनके पांव की पाज़ेबें दिखाई दे रही थीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर्दा के सम्बन्ध में क़ुरआन की आयात की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं :

"ईमानदार महिलों को कह दो कि वे भी अपनी आँखों को नामुहर्रम (वह मर्द जिस से सत्री का पर्दा अनिवार्य है) मर्दों के देखने से बचाएं और अपने कानों को भी नामुहर्रम (वह मर्द जिस से सत्री का पर्दा अनिवार्य है) से बचाएं अर्थात उनकी भोग-विलास वाली आवाज़ें न सुनें और अपने सत्र (मनुष्य का वह अंग जो ढका रखा जाता है और जिसके न ढके रहने पर उसे लज्जा आती है) के स्थान को पर्दा में रखें और अपनी श्रृंगार के अंगों को किसी ग़ैर मुहर्रम पर न खोलें और अपनी ओढ़नी को इस तरह सिर पर लो कि गिरेबान से हो कर सिर पर आ जाए। अर्थात गिरेबान और दोनों कान और सिर और कनपटियां सब चादर के पर्दा में रहें और अपने पैरों को ज़मीन पर नाचने वालों की तरह न मारों।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 10 पृष्ठ 341-342)

शरई पर्दा को वर्णन करते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"शरई पर्दा यह है कि चादर को हलक़ा के तौर पर करके अपने सिर के बालों को कुछ हिस्सा पेशानी और गालों के साथ बिल्कुल ढांक लें और हर एक श्रृंगार का स्थान ढांक लें। उदाहरणता मुँह पर इर्द-गिर्द इस तरह चादर हो (उस जगह इन्सान के चेहरा की शक्ल दिखा कर जिन स्थानों पर पर्दा नहीं है उनको खुला रख कर बाक़ी पर्दे के नीचे दिखाया गया है) इस किस्म के पर्दा को इंग्लिस्तान की महिलाएं आसानी से बर्दाश्त कर सकती हैं और इस तरह पर सैर करने में कुछ हर्ज नहीं आँखें खुली रहती हैं।"

(रिव्यू आफ़ रीलीजन 4 नंबर 1 पृष्ठ 17 जनवरी 1905 ई.)

हज़रत मुस्लेह ह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो गज्ज़े बसर की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इस का उद्देश्य मर्द और महिला की निगाहों को आपस में मिलने से बचाना है अन्यथा जो महिला भी बाहर निकलेगी उसके पांव और उसकी चाल और उसका क़द और उसके हाथों की हरकत और ऐसी ही कई चीज़ें मर्दों को नज़र आयेंगी।

(तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 298)

अत: ऊपर वर्णित बातों से साबित होता है कि महिला के जिस्म का हर वह हिस्सा जो उस के श्रृंगार के ज़मुरा में आता हो और ग़ैर मुहर्रम के लिए कशिश का बायस हो, आम हालात में उस का पर्दा करना महिला पर अनिवार्य है।

प्रश्न : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल के साथ जामिआ अहमदिया के विद्यार्थियों की इंडोनेशिया की 6 नवंबर 2020 ई. को होने वाली virtual मुलाक़ात में एक विद्यार्थी ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इंडोनेशियन जमाअत को क़ायम हुए 2025 ई. में सौ साल पूरे हो जाएँगे, हमें ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करने के लिए क्या करना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने उसके उत्तर में फ़रमाया

उत्तर : सौ साल पूरे होने पर आप यह टार्गेट रखें कि पाँच साल में आपने कम से कम एक लाख बैअतें करवानी हैं और प्रत्येक जो अहमदी है उसको आपने बाजमाअत नमाज़ी बनाना है। हर अहमदी को बाक़ायदा क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने वाला बनाना है। हर अहमदी को ख़िलाफ़त से सम्बन्ध रखने वाला बनाना है। हर अहमदी को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने वाला बनाना है। ठीक है? बस यह काम कर लें तो बहुत कुछ आपने कर लिया है।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में तिथि 6 नवंबर 2020 में एक विद्यार्थी ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि हुज़ूर जब विद्यार्थी थे और आपके सामने कोई मुश्किल

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हे इस्लाम के सिपाहियों मैं बैअत उक़बा में शामिल होने वाले नक़बा में से कम उमर था लेकिन मुझे सबसे लंबी उमर मिली .... क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है! मैंने मोमिनों की जमाअत लेकर जब भी मुशरिकों की जमाअत पर हमला किया तो उन्होंने हमारे लिए मैदान ख़ाली कर दिया और अल्लाह ने उन पर हमें फ़तह दी (हज़रत उबादः बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

दूसरे विजय क्षेत्रों की तरह यहां (कंसरीन) के लोगों से भी बेहतर सुलूक किया गया और सही मुसावात की बुनियाद पर उनके मध्य इन्साफ़ क़ायम किया गया जिसमें कोई ताक़तवर किसी भी कमज़ोर पर अत्याचार और शोषण नहीं कर सकता था

दमिश्क की फ़तह के बाद समक्ष आने वाली घटनाएं, फ़हल, बीसान, तिब्रिया, हुम्मस, मर्जुल रूम, हमात, लाज़किया, कंसरीन और केसारिया की फ़ुतूहात का तफ़सीली वर्णन

चार मरहूमीन आदरणीया ख़दीजा साहिबा पत्नी आदरणीय मौलवी के मुहम्मद उल्वी साहिब पूर्व मुबल्लिग़ केरल, आदरणीय मलिक सुलतान रशीद ख़ान साहब आफ़ कोट फ़तह ख़ान साबिक़ अमीर ज़िला अटक,

आदरणीय अबदुल क़य्यूम साहिब इंडोनेशिया और आदरणीय दाऊदा रज़्ज़ाक़ी यूनुस साहिब बेनिन का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 सितम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त का वर्णन चल रहा था और इस ज़माने की जो जंगें थीं उनका वर्णन था। इतिहास की पुस्तकों के अध्यन से मालूम होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में दमिश्क का घेराव कई महीने तक जारी रहा और उनकी वफ़ात के कुछ समय के बाद इस जंग में मुस्लमानों को फ़तह हासिल हुई। बहरहाल क्योंकि यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर की है इसलिए इस जंग की तफ़सीलात जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन होगा तो वहां पेश की जाएँगी इन शा अल्लाह। दमिश्क की फ़तह के बाद जो वाक़ियात हैं वह बयान करता हूँ।

दमिश्क की फ़तह हो जाने के बाद अबू उबैदा ने ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो को बिक़ाअ की मुहिम्ज़ पर रवाना किया। बिक़ाअ दमिश्क, बा लबक और हिम्ज़स के मध्य एक वसीअ क्षेत्र है जिसमें बहुत सारी बस्तियां स्थित हैं। उन्होंने उसे फ़तह किया और एक सरिया अगली कार्रवाई के लिए आगे भेजा। मेसनून नामी चशमा पर रोमियों और सरिया वालों की लड़ाई हो गई। फिर दोनों में लड़ाई हुई। संयोग से रोमियों में से सिनान नाम का एक आदमी बेरूत के उपरी हिस्सा से मुस्लमानों पर हमला करने में सफ़ल हो गया और मुस्लमानों की अच्छी ख़ासी संख्यां को शहीद कर दिया। बेरूत जो है यह समुंद्र के किनारे मुल्क-ए-शाम का एक प्रसिद्ध शहर था। इसी लिए इन शुहदा की तरफ़ मंसूब करते हुए इस चशमा का नाम ऐनुल शोहदा पड़ गया। अबू उबैदा ने दमिश्क पर यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान को अपना क़ायम मक़ाम बनाया और यज़ीद ने दिहया बिन ख़लीफ़ा को एक सरिया के साथ तदमुर रवाना किया ताकि वहां फ़तह का रास्ता हमवार करें। तदमुर के इलाक़े में एक क़दीम और प्रसिद्ध शहर है जो हलब से पाँच दिन की दूरी पर स्थित है। यह जिस यज़ीद का वर्णन हो रहा है यह हज़रत अबू सुफ़ियान के बेटे थे।

इसी तरह अबू ज़हरा कुशेरी को बेसनीया और होरान भेजा लेकिन वहां के लोगों ने सुलह कर ली। बेसनीया दमिश्क के क़रीब एक बस्ती का नाम है। होरान दमिश्क का एक बड़ा इलाक़ा था जिसमें बहुत सारी बस्तियां और खेती वाली ज़मीनें थीं। शुर हबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हो ने अरदन की दारुल हकूमत तबरिया को छोड़ कर अन्य पूरे मुल्क में जंग के माध्यम से अर्थात जंग ठोंसी गई तो जंग के माध्यम से क़बज़ा कर लिया और तिब्रिया वालों ने मुसालेहत कर ली। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो बिक़ाअ के इलाक़े से सफ़ल हो कर लौटे। बालबक वालों ने आप से सुलह कर ली और आपने उनके साथ मुआहिदा तहरीर कर दिया।

(सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो शख़सीत और कारनामे अज़ मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 730 मकतबा अल् फ़ुक़ान ख़ान गढ़) (मुन्जमुल बुल्दान, भाग अव्वल, पृष्ठ 402,557,623) (मोअज्जम बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 20, 364)

बालबक भी दमिश्क से तीन दिन की दूरी (यह तारीख़ में जो लिखा हुआ है) पर स्थित एक क़दीम शहर है। (मोअज्जम बुल्दान, भाग अव्वल, पृष्ठ 537-538)

यहां दिनों की दूरी से मुराद यह है कि इस ज़माने में ऊंटों या घोड़ों के माध्यम से (सफ़र का जो माध्यम था उस के माध्यम से जो दूरी होती थी।

फ़िहिल एक जगह है। इस की फ़तह चौदह हिज्री में हुई। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में तहरीर किया कि मुझे मालूम हुआ है कि हरक़्ल हिम्ज़ में मुक़ीम है और वहां से दमिश्क की फ़ौजें रवाना कर रहा है लेकिन यह फ़ैसला करना मेरे लिए कठिन है कि पहले दमिश्क पर हमला करूँ या फ़िहिल पर। फ़िहिल भी शाम में एक जगह का नाम है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर में तहरीर फ़रमाया पहले दमिश्क पर हमला कर के उसे फ़तह करो कि वह शाम का क़िला है और इस का सदर स्थान है। साथ ही फ़िहिल में भी सवार दस्ते भेज दो जो उन्हें तुम्हारी तरफ़ न बढ़ने दें। अगर दमिश्क से पहले फ़िहिल फ़तह हो जाए तो बेहतर अन्यथा दमिश्क फ़तह कर लेने के बाद थोड़ी सी फ़ौज वहां छोड़ देना और समस्त सरदारों को अपने साथ लेकर फ़िहिल रवाना हो जाना और अगर अल्लाह तआला तुम्हारे हाथों फ़िहिल को फ़तह करा दे तो ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो र तुम हिम्ज़ चले जाना और शरह्बील और अम्र को अरदन और फ़लस्तीन भेज देना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का जो ख़त था, जब यह हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को मिला तो उन्होंने फ़ौज के दस अफ़िसरों को जिन में सबसे नुमायां अबुल अवाल सल्मी थे फ़िहिल भेज दिया और ख़ुद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ दमिश्क रवाना हो गए। रूमी फ़ौजों ने मुस्लमानों को अपनी तरफ़ आते देखा तो अपने आस पास की ज़मीन में बूहेरा तबरिय्या और दरयाए अरदन का पानी छोड़ दिया जिससे सारी ज़मीन दलदल बन गई और उसे उबूर करना कठिन हो गया।

(सय्यदना उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवाद, पृष्ठ 194-195 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)(अल्-फ़ारूक़ अज़ अल्लामा शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 114 दारुल इशात कराची 1991 ई.)(मोअज्जम बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 268)

बहरहाल हरक़्ल ने दमिश्क की इमदाद के लिए जो फ़ौजें भेजी थीं वे भी दमिश्क तक नहीं पहुंच सकी थीं। पानी खोलने की वजह से समस्त रास्ते बंद हो गए परन्तु मुस्लमान साबित-क़दम रहे। मुस्लमानों की ताकत देखकर ईसाई सुलह पर आमादा हुए और अबू उबैदा के पास संदेश भेजा कि कोई व्यक्ति सफ़ीर बन कर आए। अबू उबैदा ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो को सिफ़ारत के लिए भेजा। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके सामने इस्लामी तालीम पेश की परन्तु उन्होंने अर्थात दुश्मनों ने उसे क़बूल नहीं किया। अन्य विषयों के अतिरिक्त रोमियों ने हज़रत मआज़ को यह पेशकश की कि हम तुम को ब्लका का ज़िला और अरदन का वह हिस्सा जो तुम्हारी ज़मीन से जुड़ा है देते हैं तुम यह मुलूक छोड़कर फ़ारस चले जाओ। पहले ख़ुद ही फ़ौजें इकट्ठी कर रहे थे जब देखा कि हारने का वक़्त आया है तो यह पेशकश की। हज़रत माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने इंकार किया और उठ के वापस चले आए कि नहीं। रोमियों ने सीधे अबू उबैदा से गुफ़्तगु करनी चाही। इस लिए इस उद्देश्य से एक ख़ास क़ासिद भेजा। जिस वक़्त वह क़ासिद

वहां मुस्लमानों के कैंप में पहुंचा तो अबू उबैदा ज़मीन पर बैठे हुए थे और हाथ में तीर थे जिनको उलट-पलट कर रहे थे। क़ासिद ने ख़्याल किया कि सिपहसालार बड़ी शान और शोकत रखता होगा और यही उस की पहचान का माध्यम होगा लेकिन वह जिस तरफ़ आँख उठा कर देखता था सब एक रंग में डूबे नज़र आते थे।आख़िर घबरा कर पूछा कि तुम्हारा सरदार कौन है? लोगों ने अबू उबैदा की तरफ़ इशारा किया। वह हैरान रह गया और ताज्जुब से उनकी तरफ़ सम्बोधित हो कर कहा कि क्या दरहक़ीक़त तुम ही सरदार हो? अबू उबैदा ने कहा हाँ। क़ासिद ने कहा कि हम तुम्हारी फ़ौज को फी कस दो दो अशर्फ़ियां दे देंगे, तुम यहां से चले जाओ। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इंकार किया। क़ासिद इस पर बड़ा नाराज़ हुआ और उठकर चला गया। अबू उबैदा ने उस के तेवर देखकर फ़ौज को कमरबंदी का हुक्म दिया, तैयार रहने का हुक्म दिया और समस्त हालात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आज्ञा फ़रमाई कि ठीक है पेशक़दमी करो क्योंकि रूमी फ़ौजें इकट्ठी हो रही हैं और हौसला दिलाया कि साबित-क़दम रहो। ख़ुदा तुम्हारा सहायक है। अबू उबैदा ने उसी दिन कमरबंदी का हुक्म दे दिया था लेकिन रूमी मुक़ाबले में नहीं आए और अगली सुबह फिर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो केवल सवारों के साथ मैदान में गए। रूमी लश्कर भी तैयार था। दोनों में जंग हुई। मुस्लमानों की साबित क़दमी देखकर रूमी सिपहसालार ने ज़्यादा लड़ना बेकार समझा और वापस जाना चाहा। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने पुकारा। रूमी अपना ज़ोर लगा चुके हैं अब हमारी बारी है। इस के साथ ही मुस्लमानों ने अचानक हमला किया और रोमियों को पराजय कर दिया। ईसाई सहायता के इंतिज़ार में लड़ाई को टाल रहे थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी चाल समझ गए तो उन्होंने हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में कहा कि रूमी हम से मरऊब हो चुके हैं हमले का यही वक़्त है। इस लिए उसी वक़्त ऐलान किया गया कि अगले दिन हमला होगा फ़ौज तैयार हो जाए। रात के पिछले-पहर हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने लश्कर को तर्तीब दिया। रूमी लश्कर की संख्यां तक़रीबन पच्चास हज़ार थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत और जीवनी लिखने वाले दो सीरत निगार हैकल और सलाबी ने यह संख्यां अस्सी हज़ार से एक लाख तक भी वर्णन की है। बहरहाल एक घंटे की शदीद जंग हुई। इस के बाद रूमी लश्कर के पांव उखड़ गए और वे निहायत बदहवासी से भागे। बाद में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दिया कि समस्त ज़मीन जो क़बज़े में की गई है उनके मालिकों के पास ही रहेगी। कोई ज़मीन किसी से ली नहीं जाएगी और लोगों की जानें और माल और ज़मीन और मकानात और इबादत के स्थान सब सुरक्षित रहेंगे केवल मसाजिद के लिए जगह ली जाएगी।

(उद्धरित फ़ारूक़ अज़ अल्लामा शिब्ली पृष्ठ 114 से 118 दारुल इशात कराची 1991 ई.) (सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 730 मकतबा अल् फुर्कानगढ़)(सय्यदना उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवाद, पृष्ठ 213 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

कोई ज़मीन अगर लेनी है तो मसाजिद के लिए लेनी है। बाक़ी ज़मीनें उनके मालिकों के पास ही रहेंगी। फिर फ़तह बेसान सान का बयान है। जब शरह्बील फ़िहिल की जंग से फ़राग़त प्राप्त कर चुके तो वह अपनी फ़ौज और अम्र को लेकर अहले बेसान की तरफ़ बढ़े और उनका घेराव कर लिया। इस वक़्त अबुल-ऊर और उनके साथ चंद और सरदार तिब्रिया का घेराव किए हुए थे। बेसान तिब्रिया के दक्षिण में अठारह मील की दूरी पर स्थित जगह है। अरदन के क्षेत्रों में दमिश्क और इस के बाद की अन्य मुहिम्मात में रोमियों की पै दर पै शिकस्तों की ख़बर फैल चुकी थी और लोगों को मालूम हो गया था कि शरह्बील और उनके साथ अम्र बिन आस और हरिस बिन हश्शाम और सुहेल बिन अम्र अपनी फ़ौज को लिए हुए बेसान के इरादे से जा रहे हैं इसलिए हर जगह लोग क़िला में जमा हो गए। शरह्बील ने बेसान पहुंच कर उस का घेराव कर लिया जो कुछ दिन तक जारी रहा परन्तु बाद में वहां के कुछ लोग मुक़ाबले के लिए बाहर निकले। मुस्लमान उनसे लड़े और उनका ख़ातमा कर दिया। बाक़ी लोगों ने सुलह की निवेदन की जिसको मुस्लमानों ने दमिश्क की शर्तों पर स्वीकार कर लिया। जो फ़तह दमिश्क की शर्तों की थीं उसी बुनियाद पर वह भी स्वीकार हुईं। (तारीख़ तिब्री (अनुवाद भाग 2 हिस्सा 2, पृष्ठ 216 नफ़ीस एकेडेमी कराची) उल-फ़ारूक़ अज़ शिब्ली नुमानी नुमानी, पृष्ठ 114 दारुल इशात कराची 1991 ई.)

फिर फ़तह तिब्रिया है। जब तिब्रिया वालों को बेसान की फ़तह और इस के मुआहिदा की सूचना पहुंची तो उन्होंने अबुल-ऊर से इस शर्त पर सुलह की कि उनको शरह्बील की ख़िदमत में पहुंचा दिया जाए। अबुल-ऊर ने उनकी निवेदन को स्वीकार कर लिया। इस लिए तिब्रिया वालों और अहल बेसान से दमिश्क वाली शर्तों पर ही सुलह हो गई और यह भी तै हुआ कि शहरों और इस के क़रीबी गावं की आबादियों के समस्त मकानात में से आधे मुस्लमानों के लिए ख़ाली कर दिए जाएं और बाक़ी आधे में स्वयं रूमी रिहायश इख़तियार करें और वे फी कस सालाना एक दीनार और ज़मीन की पैदावार में से निर्धारित हिस्सा अदा करेंगे। इसके बाद मुस्लमान क़ायदीन और उनकी फ़ौजें आबादी में मुक़ीम हो गईं और अरदन की सुलह पाया-ए-तकमील को पहुंच गई और समस्त इमदादी दस्ते अरदन के इलाक़े में मुख़्तलिफ़ स्थानों में सुकूनत पज़ीर हो गए और फ़तह की बशारत, ख़ुशख़बरी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में रवाना कर दी गई।

(तारीख़ अनुवाद) भाग 2, हिस्सा दोम, पृष्ठ 216-217 नफ़ीस एकेडेमी कराची)

फिर फ़तह हिम्ज़, यह चौदह हिज्री में हुई। इस के बाद हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हिम्ज़ की तरफ़ पेशक़दमी की जो शाम का एक प्रसिद्ध शहर था और जंगी और सयासी महत्त्व रखता था। हिम्ज़ दमिश्क और हलब के मध्य शाम में स्थित है। हिम्ज़ में एक बड़ा हैकल था जिसके दर्शन के लिए दूर-दूर से लोग आते और इस का पुजारी बनने पर गर्व महसूस करते। बहरहाल हिम्ज़ के क़रीब रोमियों ने ही ख़ुद बढ़कर मुक़ाबला करना चाहा और आगे बढ़े। इस लिए एक फ़ौज-ए-कसीर हिम्ज़ से निकल कर जोसिया में मुस्लमानों के आमने सामने हुई लेकिन उनको पराजय हुई। हज़रत अबू उबैदा और और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हिम्ज़ पहुंच कर शहर का घेराव कर लिया। सख़्त सर्दी का मौसम था। रोमियों को यक़ीन था कि मुस्लमान खुले मैदान में देर तक नहीं लड़ सकेंगे। इस के साथ हर्क़ल की ओर से सहायता की आशा भी थी। इस लिए उसने जज़ीरे से एक फ़ौज भी रवाना की लेकिन हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो इराक़ के अभियान पर मामूर थे कुछ फ़ौज इस लश्कर की तरफ़ भेज दी जिसने इस लश्कर को वहीं रोक लिया। (उद्धरित अल्फ़ारूक़ अज़ मौलाना शिब्ली नुमानी पृष्ठ 118-119 दारुल इशात कराची 1991ई.) (मोअज्मुल बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 347)

इतिहासकारों ने लिखा है कि रोमियों के पांव में चमड़े के जुराबें होती थीं फिर भी उनके पांव ज़ख़्मी हो जाते जबकि सहाबा के पांव या मुस्लमानों की जो फ़ौज थी उनके पांव में जूतों के अतिरिक्त कुछ नहीं होता था।

(सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो शख़सीत और कारनामे अज़ मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 734 मक्तबा अल् फ़ुकान ख़ान गढ़)

हरक़्ल अहल-ए-हिम्ज़ से सहायता का वादा कर के और उन्हें मुक़ाबले की हिम्मत दिला कर ख़ुद रूहा चला गया। वादा किया और ख़ुद वहां से चला गया। हिम्ज़ वाले क़िला बंद हो कर बैठ रहे। वो उसी दिन मुस्लमानों से लड़ने के लिए निकलते जिस दिन सख़्त सर्दी होती। रूमी हरक़्ल की सहायता के इंतिज़ार में थे और चाहते थे कि मुस्लमान सर्दी से आजिज़ आकर भाग जाएं लेकिन मुस्लमान सबात क़दम रहे और हरक़्ल की सहायता भी उनको न पहुंची अर्थात इस शहर के लोगों को और सर्दी के दिन भी गुज़र गए तो हिम्ज़ वालों को यक़ीन हो गया कि अब उन लोगों का मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। इस लिए उन्होंने सुलह का निवेदन किया। मुस्लमानों ने उसे क़बूल कर लिया और शहर के सारे मकान शहर वालों के लिए छोड़ दिए गए और दमिश्क की तरह ख़राज और टैक्स पर सुलह कर ली गई। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्होने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को समस्त वाक़ियात से अवगत किया जिसके उत्तर में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का हुक्म आया कि तुम अभी वहीं ठहरो और शाम के ताक़तवर अरब के कबायल को अपने झंडे तले जमा करो। मैं भी इन शा अल्लाह तआला बराबर यहां से सहायता भेजता रहूँगा।

(उद्धरित सय्यदना उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 331-332 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

फिर मर्जू रोमा एक जगह है इसी साल मर्जू रोमा का वाक़िया पेश आया। मर्जू रोमा दमिश्क के क़रीब एक स्थान था। वाक़िया यह हुआ कि हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो फ़िहिल से हिम्ज़ जाने के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ रवाना हुए। सब ने ज़ुल्कला स्थान पर पड़ाव डाला। उनकी इस नक़ल-ओ-हरकत की सूचना हरक़्ल को हुई तो उसने तूज़रा बतरीक को रवाना किया। वह मर्जे दमिश्क और उस की मग़रिबी जानिब में क़ियाम पज़ीर हुआ। अबू उबैदा ने मर्जू रोम और इस के लश्कर से इबतिदा की। इस वक़्त उनकी अर्थात मुस्लमानों की हालत यह थी कि सर्दी का मौसम आ चुका था और उनके जिस्म

ज़ख़्मों से भरे हुए थे। जब ये लोग मर्जू रोम पहुंचे तो शनसरवी भी उधर आ गया और तूज़रा के क़रीब ही शाह सवारों के साथ उसने पड़ाव डाल लिया। यह शनसदर तूज़रा की सहायता और हिम्ज़ वालों के बचाओ के लिए आया था। वह एक किनारे पर अपने लश्कर के साथ ठहर गया। जब रात आई तो उनका दूसरा सिपहसालार तूज़रा वहां से रवाना हो गया और उसके जाने की वजह से वह जगह ख़ाली हो गई। तूज़रा के समक्ष हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो थे जबकि शनस के मुक़ाबले में हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो को जब इस बात की ख़बर मिली कि तूज़रा यहां से दमिश्क रवाना हो चुका है तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने सर्वसहमती से इस बात का निर्णय किया कि तूज़रा का पीछा करते हुए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो रवाना हो जाएं। इस लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो घुड़सवारों का एक दस्ता लेकर उसी रात उस का पीछा करते हुए चल पड़े। उधर यज़ीद बिन अबू सूफ़ियान को तूज़रा की इस हरकत की ख़बर मिल गई थी। इस लिए वग तूज़रा के मुक़ाबले पर आ गए और दोनों लश्करों में जंग का मैदान गर्म हो गया। अभी दोनों के मध्य लड़ाई जारी थी कि पीछे से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने लश्कर के साथ अवसर पर पहुंच गए और उन्होंने तूज़रा के पीछे से आक्रमण कर दिया। परिणाम स्वरूप नावों के पिछले हिस्से डूब गए और दुश्मन सामने और पीछे दोनों तरफ़ से मारा गया। मुस्लमानों ने उनको मौत की नींद सुला दिया। उनमें से ज़िंदा केवल वही बच्चे जिन्हों ने भागने का मार्ग चुना। मुस्लमानों को इस मार्के में जो माल-ए-ग़नीमत हाथ आया इस में सवारी के जानवर, हथियार, लिबास इत्यादि थे। इसको हज़रत यज़ीद बिन अबू सूफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के सिपाहीयों में बांट दिया। इसके बाद हज़रत यज़ेदओ दमिश्क की जानिब रवाना हो गए और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो की जानिब वापस चले गए। इस्लाम की तारीख़ में जो बदनाम यज़ीद है वह मुआविया के बेटे थे और यह यज़ीद अबू सूफ़ियान के बेटे यज़ीद हैं। सरदार था, इस को हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़तल किया था। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो जब तूज़रा का पीछा करने रवाना हो गए तो हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने शनस का मुक़ाबला किया। दोनों फ़ौजों में मर्जुर रोम के स्थान पर जंग छिड़ गई। इस्लामी लश्कर ने बहुत से लोगों को क़तल किया और हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने शनस का अंत कर दिया। मर्जुर रोम दुश्मन की लाशों से भर गया। इन लाशों के कारण वह स्थान बदबूदार हो गया था। रोमियों में से जो भाग गए वे तो बच गए। बाक़ी कोई मौत के मुँह से न बच सके। मुस्लमानों ने भागने वालों का हिम्ज़ तक पीछा किया। (अल् कामिल फ़िल तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 321 दारुल क़ुतुब अल् इल्मिया बेरूत (तारीख़ अल् तिब्री (अनुवाद भाग 2 हिस्सा 2, पृष्ठ 359-360 नफ़ीस एकेडेमी कराची)

फिर हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौज लेकर हमात की तरफ़ रवाना हुए। हमात भी शाम का एक क़दीम शहर है जो उस वक़्त दमिश्क से पाँच दिन की दूरी पर स्थित था। हमाम वालों ने उनके आगे सिर आज्ञाकारित के लिए झुका दिया, स्वीकार कर लिया। शीज़र वालों को जब मालूम हुआ तो उन्होंने भी हम्मात वालों की भांति सुलह कर ली। शीज़र हम्मात से आधे दिन की दूरी पर स्थित एक बस्ती थी। फिर हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने सलमिया को फ़तह किया। सलमिया भी हम्मात से दो दिन की दूरी पर स्थित एक बस्ती थी।

(सय्यदना उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवाद, पृष्ठ 333 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)(मोअज्जम बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 345) (मोअज्जम बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 272)

इस के बाद फिर लाज्किय्या की फ़तह हुई जो चौदह हिज्री की है। इस्लामी लश्कर ने हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो की सरकर्दगी में लाज्किय्या का रुख किया जो शाम का एक शहर है और समुंद्र के किनारे पर स्थित है और हिम्ज़ के निकट के क्षेत्रों में इस को शुमार किया जाता है। लाज्किय्या वालों ने जब इस्लामी लश्कर को अपनी तरफ़ आते देखा तो क़िला बंद हो कर बैठ गए और शहर के दरवाज़े बंद कर के मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए। उन्हें संतोष था कि अगर मुस्लमानों ने उनका घेराव किया तो वे मुक़ाबले की ताक़त रखते हैं और इतनी देर में समुंद्र के रास्ते उन्हें हर्क़ल से सहायता पहुंच जाएगी। मुस्लमानों ने इस शहर का घेराव कर लिया। हिफ़ाज़ती इंतिज़ामात के लिहाज़ से यह शहर बहुत मज़बूत था और फ़ौजी चौकियों की वजह से काफ़ी प्रसिद्ध था। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस को फ़तह करने की एक नई तरकीब निकाली क्योंकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो जनगी हिक्मत-ए-अमली जानते थे। उन्होंने महसूस कर लिया कि उसे पार करना, फ़तह करना बहुत मुश्किल है। अगर वे उस के मुक़ाबले पर ख़ेमा-ज़न हो जाते हैं तो अरसा क़ियाम बहुत लंबा हो जाएगा और यह भी हो सकता है कि लंबा अरसा का जो यह घेराव है इस दौरान दुश्मनों की तरफ़ से उनको सहायता भी पहुंच जाए और यहां से नाकाम लौटना पड़े या फिर शहर का घेराव ज़्यादा लंबा किया जाए तो अन्ताकिया जाना असम्भव हो जाएगा तो आपने एक रात मैदान में बहुत से गहरे गढ़े खुदवाए इतने कि घोड़े पर सवार बैठा उनमें छुप जाए और उन्हें घास से छिपा दिया और सुबह घेराव उठा कर हिम्ज़ की तरफ़ रवाना हो गए। शहर-वालों ने घेराव उठते देखा तो ख़ुश हुए और इतमीनान से शहर के दरवाज़े खोल दिए। दूसरी तरफ़ हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो रातों रात अपनी फ़ौज समेत वापस आ गए और गुफ़ा जैसे गढ़ों में छिप गए। सुबह जब शहर के दरवाज़े खुले तो मुस्लमानों ने उन पर हमला कर दिया कुछ मुस्लमानों ने शहर के दरवाज़े पर क़बज़ा कर लिया जो क़िले से बाहर थे उन्होंने भागने में अपनी खेरियत जानी और जो शहर में मौजूद थे उन पर ख़ौफ़ तारी हो चुका था। इस लिए जो लोग शहर में थे उनमें से हर एक जान बचाने की कोशिश में लग गया। उनके लिए इताअत और तस्लीम के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। इस लिए उन्होंने सुलह कर ली और भागने वालों ने अमान चाही। मुस्लमानों ने शहर में दाख़िल हो कर शहर को फ़तह कर लिया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो ने टैक्स पर सुलह कर ली और उनका उद्देश्य उन्ही के क़बज़े में रहने दिया और बाद में मुस्लमानों ने इस के क़रीब ही अपनी एक मस्जिद बना ली। (हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवाद, पृष्ठ 333-334 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर) (उल-फ़ारूक़ अज़ अल्लामा शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 118-119 दारुल इशात कराची 1991 ई.)

इस फ़तह के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा कि इस साल मज़ीद पेशक़दमी न की जाए।

(उद्धरित अल् फ़ारूक अज़ शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 119 दारुल इशात कराची 1991 ई.)

फिर फ़तह कनिसरीन है। यह पंद्रह हिज्री की है। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो को कनिसरीन की तरफ़ रवाना किया जो राज्य हलब का एक रौनक वाला शहर था। हलब के रास्ते में पहाड़ के मध्य कनिसरीन का क़िला स्थित था। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो हाज़िर स्थान के क़रीब पहुंचे। हाज़िर भी हलब के क़रीब एक स्थान है इस जगह रूमी लोग मीनास के अधीन आपके मुक़ाबले में आ गए। हरक़्ल के बाद रुम का सबसे बड़ा सिपहसालार मीनास ही था। बहरहाल वहां के बाशिंदों ने और जो उन के पास अरब ईसाई थे उन्होंने मुस्लमानों का मुक़ाबला किया। अरबों का यह दस्तूर था कि वह शहर की हिफ़ाज़त के लिए शहर से बाहर निकल कर ख़ेमे डाल देते थे। इस लिए ये ईसाई अरब भी इसी दस्तूर के अनुसार बाहर ख़ेमा-ज़न थे। सख़्त मार्के के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने रोमियों का बहुत सा लश्कर क़तल कर दिया और उनके सरदार मीना उस को भी क़तल कर दिया। इलाक़े के लोगों ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास संदेश भेजा कि हम अरब लोग हैं और जंग करने पर राज़ी ही नहीं थे। हमें ज़बरदस्ती इस जंग में शामिल किया गया था। इस लिए हमसे दरगुज़र किया जाए। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनका बहाना स्वीकार किया और उनसे अपना हाथ रोक लिया।

कुछ रूमी भाग कर कनिसरीन में क़िला बंद हो गए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनका पीछा किया लेकिन जब वे कनिसरीन पहुंचे तो रूमी शहर के दरवाज़े बंद कर चुके थे। यह देखकर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके पास यह संदेश भेजा कि अगर तुम बादलों में भी जा छुपोगे तो अल्लाह तआला हमको तुम्हारे पास पहुंचा देगा या तुम्हें हमारी तरफ़ फेंक देगा। कुछ दिन तो वे यूंही क़िला बंद रहे लेकिन आख़िर अंततः कनिसरीन वालों को यक़ीन हो गया कि अब कोई राह-ए-नजात नहीं। इस लिए उन्होंने निवेदन किया कि हिम्ज़ की सुलह की शर्तों पर उन्हें अमान दी जाए लेकिन उन्होंने जो पहले आदेश की नाफ़रमानी की थी हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो उन्हें इस आदेश की नाफ़रमानी की सज़ा देने का फ़ैसला कर चुके थे। इसलिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो शहर को तबाह करने के सिवा और किसी बात पर राज़ी नहीं हुए। कनिसरीन वाले अपने धन और सामान और परिवार को तक़दीर के हवाले कर के अन्ताकिया भाग गए। जिस वक़्त हज़रत अबू उबैदा बिन अल् जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो कनिसरीन पहुंचे तो उन्होंने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के इस फ़ैसले को इन्साफ़ और इन्साफ़ के ठीक अनुसार पाया और शहर के क़िले और फ़सीलें तौड़ दीं। इस के

बाद उन्होंने महसूस किया कि इन्साफ़ के साथ शफ़क़त का सुलूक भी होना चाहिए। यह तो इन्साफ़ था जो पहले दुश्मनों से किया गया, अब शफ़क़त भी मुस्लमानों को करनी चाहिए। फिर उन्होंने शफ़क़त के लिए यह किया कि शहर वालों को उनके निवेदन के अनुसार अमान भी दे दी और यह भी कहा जाता है कि शहर के किलीसा और मकान तक़सीम कर दिए गए। चर्च भी और मकान भी तक़सीम कर दिए गए और आधा हिस्से पर मुस्लमान क़ाबिज़ हो गए, आधा हिस्सा उन्ही के पास रहने दिया। एक रिवायत यह भी है कि शहर की कुछ ज़मीन लेकर वहां मस्जिद का निर्माण करवा दिया गई और बाक़ी सब कुछ बदस्तूर इलाक़ा वालों के क़बज़ा में ही रहने दिया। जो लोग भाग गए थे वे भी टैक्स क़बूल कर के वापस आ गए थे। दूसरे विजय क्षेत्रों की तरह यहां के लोगों से भी बेहतर सुलूक किया गया और सही बराबरी की बुनियाद पर उनके मध्य इन्साफ़ क़ायम किया गया जिसमें कोई ताक़तवर किसी भी कमज़ोर पर अत्याचार और शोषण नहीं कर सकता था। (सय्यदना उमर फ़ारूक़ आज़म अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 333 से 339 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर) (तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 445 दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 1987 ई.) (मोअज्जम बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 238 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर फ़तह केसरिया है। यह भी पंद्रह हिज्री की है। केसरिया शाम का साहिली शहर है जो तिब्रिया से तीन दिन की दूरी पर स्थित था। यह जंग किस वर्ष में हुई? इस के बारे में अलग अलग रिवायात मिलती हैं। एक तो है कि पंद्रह हिज्री। दूसरे कथन के अनुसार सोला हिज्री में हुई और तीसरी रिवायत के अनुसार उन्नीस हिज्री और चौथे कथन के अनुसार बीस हिज्री में हुई। (तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 511 सन् 19, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.) (मोअज्जम बुल्दान, भाग 4 पृष्ठ 478 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल जिस वक़्त हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो शुमाली रुम में फ़ातिहाना पेशक़दमी फ़र्मा रहे थे हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत शरहबील बिन हसना रोम की इन फ़ौजों से जंग कर रहे थे जो फीलिस्तीन में जमा थे और उन्हें शिकस्त देने की कोशिश कर रहे थे लेकिन यह कोई आसान काम नहीं था। ये फ़ौजें संख्यां की अधिकता और सामान के एतबार से बहुत क़वी थीं और उनकी क़ियादत रोम का सबसे बड़ा सिपहसालार अतरबून कर रहा था जिसका विवेक और जंगी सूझ-बूझ देश में अपना कोई हरीफ़ नहीं रखती थी। उसने सोचा कि फ़ौज को मुख़्तलिफ़ स्थानों पर फैला दिया जाए ताकि शक्ति का समय भी तन्हा इसी के हाथ में रहे और अगर इस फ़ौज के कुछ हिस्सों पर अरब फ़तह भी पाऊं तो दूसरे हिस्से से प्रभावित न हूँ। इस लिए उसने रमला और इसी इलिया पर एक भारी लश्कर निर्धारित किया और उसके समर्थन के लिए गज़ा, सबस्तिया, नाबुलुस, लुद और याफ़ा में फ़ौजें छोड़ दें। इसके बाद अरबों की आमद के इंतिज़ार में बैठ गया। उसे यक़ीन था कि वह अरबों पर फ़तह पाने और उनकी कुव्वतों को तितर बितर करने की ताक़त और क़ुव्वत रखता है। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने अवसर की नज़ाकत को महसूस कर लिया। उन्होंने सोचा कि अगर वह अपनी समस्त फ़ौजों के साथ अत्रबून के मुक़ाबले में खड़े होते हैं तो रोमी फ़ौजें एक दूसरे से मिल जाएँगी और वे उन पर विजय प्राप्त नही कर सकेंगे बल्कि हो सकता है कि रोमी उन पर फ़तह पालें। इस लिए उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को पत्र लिखा तो आपने यज़ीद बिन अबू सूफ़ियान को हुक्म दिया कि अपने भाई मुआविया को केसरिया फ़तह करने भेजो ताकि समुद्री रास्ते से अत्रबून को सहायता न पहुंच सके। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अमीर मुआविया के नाम ख़त में तहरीर फ़रमाया कि मैं तुम्हें केसरिया का अमीर बनाता हूँ, वहां जाओ और इस के ख़िलाफ़ अल्लाह से सहायता मांगों और لَا حَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اور اَللّٰهُ رَبُّنَا وَثِقْتُنَا وَرَجَاؤُنَاوَمَوْلٰنَا، نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ بکث बकसरत पढ़ो। अर्थात गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की ताक़त केवल अल्लाह ही को है जो बहुत बुलंद शान वाला और बहुत अज़मत वाला है और अल्लाह हमारा रब है और हमारा भरोसा है और वह हमारी आशागाह है। वह हमारा मौला है और क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा सहायक है।

अल्फ़ारूक़ में लिखा है कि केसरिया पर अव्वल तेराह हिज्री में अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने चढ़ाई की और मुद्दत तक घेराव किए पड़े रहे लेकिन फ़तह नहीं हो सकी। अबू उबैदा की वफ़ात के बाद हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान को उनकी जगह निर्धारित किया और हुक्म दिया कि केसरिया की मुहिम पर जाओ। यज़ीद सतरह हज़ार के लश्कर के साथ रवाना हुए और शहर का घेराव किया लेकिन अठारह हिज्री में जब बीमार हुए तो अपने भाई अमीर मुआविया को अपना क़ायम मक़ाम निर्धारित कर के दमिश्क चले आए। वहीं उनकी वफ़ात हो गई।

केसरिया शाम के समुद्र के किनारे पर स्थित है और फ़लस्तीन के अज़ला में शुमार किया जाता है। आज बहरहाल यह वीरान पड़ा है लेकिन इस ज़माने में बहुत बड़ा शहर था और बाक़ौल ब्लाज़री के तीन सौ बाज़ार आबाद थे जिसकी हिफ़ाज़त पर एक बहुत बड़ा रूमी लश्कर निर्धारित था। यहां उनका एक बहुत मज़बूत और ख़तरनाक सरहदी क़िला था। हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हो ने केसरिया पहुंच कर उसका घेराव कर लिया। रूमी कभी इस्लामी फ़ौज पर हमला करते लेकिन शिकस्त खा कर फिर अपने मोर्चों में वापस हो जाते। आख़िर कार जब घेराव लम्बा हो गया तो एक दिन मरने मारने के इरादे से निकले लेकिन शिकस्त खाई और ऐसी इबरतनाक शिकस्त खाई कि मैदान-ए-जंग में उनके अस्सी हज़ार सिपाही मारे गए और यह संख्यां पराजय और भागने के बाद एक लाख तक पहुंच गई। केसरिया की फ़तह और इस के लश्कर की तबाही के बाद मुस्लमान इस तरफ़ से निश्चित और सुरक्षित हो गए और इस रस्ते से रोमियों की सहायता का सिलसिला रुक गया। हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हो ने माल-ए-ग़नीमत के पांचवे भाग के साथ फ़तह की ख़बर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भिजवाई।

एक और रिवायत में है कि हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हो ने बड़े साज़ो सामान से घेराव किया। शहर वाले कई दफ़ा क़िला से निकल निकल कर लड़े लेकिन हर दफ़ा शिकस्त खाई समस्त शहर पर क़बज़ा नहीं हो सका। एक दिन एक यहूदी ने जिसका नाम यूसुफ़ था, अमीर मुआविया के पास आकर एक सुरंग का निशान दिया जो शहर के अंदर अंदर क़िला के दरवाज़े तक गई थी। इस लिए चंद बहादुरों ने इस राह क़िला के अंदर पहुंच कर दरवाज़ा खोल दिया और साथ ही समस्त फ़ौज टूट पड़ी और फ़तह हासिल की।

हज़रत उबद: बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो जो बदरी सहाबा में से हैं वे भी इस जंग में शामिल थे। उनकी बहादुरी का वाक़िया केसरिया की जंग में इस तरह मिलता है कि केसरिया के मुहासिरे के स्थान पर हज़रत उबाद: बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो इस्लामी फ़ौज के मेमना के क़ायद थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी फ़ौज को नसीहत करने खड़े हुए। उन्हें गुनाहों से बचने और अपना मुहासिबा करने का हुक्म दिया। फिर मुजाहिदीन का एक लश्कर लेकर आगे बढ़े और बहुत सारे रोमियों को क़तल किया लेकिन अपने मक़सद में अच्छी तरह सफ़ल नहीं हुए। दुबारा अपनी जगह वापस आए, अपने साथियों को लड़ने मरने पर जोश दिलाया और अपने साथ इतना बड़ा हुजूम लेकर हमला करने के बाद भी ना मुराद लौटने पर काफ़ी हैरत और ताज्जुब का इज़हार किया और कहा कि हे इस्लाम सिपाहियों! मैं बैअत उक़बा में शामिल होने वाले नक़बा में से अर्थात नकिबों में से कम आयु का था लेकिन मुझे सबसे लंबी उमर मिली। अल्लाह ने मेरे हक़ में फ़ैसला किया कि मुझे ज़िंदा रखा, यहां तक कि आज यहां तुम्हारे साथ इस दुश्मन से लड़ रहा हूँ। कसम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है मैं ने मोमिनों की जमाअत लेकर जब भी मुशरिकों की जमाअत पर हमला किया तो उन्होंने हमारे लिए मैदान ख़ाली कर दिया अर्थात हमारी जीत हुई और अल्लाह ने उन पर हमें फ़तह दी। क्या बात है कि तुमने उन पर हमला किया और उनको हटा न सके। फिर इस के बारे में आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जो संदेह था उसे इन शब्दों में बयान किया कि मुझे तुम्हारे बारे में दो चीज़ों का अंदेशा है या तो तुम में से कोई ख़ायन है या जब तुमने हमला किया तो मुख़लिस नहीं थे। या ख़ायन हो या उस वक़्त इख़लास नहीं था जब हमला कर रहे थे। इस के बाद आपने उन्हें सिदक़ दिल से शहादत मांगने की तलक़ीन की और कहा कि मैं तुम में सबसे पेश-पेश रहूँगा और कदापि पीछे नहीं हटूंगा यहां तक कि अल्लाह तआला फ़तह से नवाज़ दे या शहादत की मौत अता फ़रमाए। इस लिए जब रूमी और मुस्लमान आपस में टकराए तो उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो आपने घोड़े से कूद कर पैदल हो गए। अमीर बिन साद अंसारी ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को पैदल देखा तो अमीर लश्कर के पैदल लड़ने की बात मुस्लमानों में आम कर दी और कहा कि सब लोग उन्ही की तरह हो जाएं। इस लिए सब ने रोमियों से ज़बरदस्त मारका-आराई की और उन्हें पराजय कर दिया। अंतत: वे भाग कर शहर में क़िला बंद हो गए।

जिस तरह अरबों ने केसरिया पर क़बज़ा किया था इसी तरह ग़ज़ा भी फ़तह कर लिया। अह्द सिद्दीक़ी में भी मुस्लमान एक दफ़ा ग़ज़ा पर क़बज़ा कर चुके थे लेकिन बाद में उन्हें वहां से निकाल दिया गया था। जब ये दोनों सरहदी स्थान मुस्लमानों के ज़ेर इक़तिदार आ गए तो हज़रत अम्र बिन आस ओ को समुंद्र की

तरफ़ से संतोष हो गया।

(सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म हैकल, पृष्ठ 357-359 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर) सीरत अमीरुल मोमनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ सलाबी, पृष्ठ 735-736, 744-745 अल् फ़ुकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ ज़िला मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान (उल-फ़ारूक़ अज़ शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 140-141 दारुल इशात कराची 1991 ई.)

यह क़िस्सा, यह वाक़ियात अभी मज़ीद चल रहे हैं। इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का वर्णन भी करना चाहता हूँ। उनके जनाज़े जुमा की नमाज़ के बाद पढ़ाऊंगा।

पहला वर्णन आदरणीया ख़दीजा साहिबा पत्नी आदरणीय मौलवी के. मुहम्मद उल्वी साहिब पूर्व मुबल्लिग़ केरल का है जो पिछले दिनों अस्सी साल की आयु में वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पिता कुन्ही मुहियुद्दीन साहिब केरल के आरम्भिक अहमदियों में से थे और मरहूमा को भी बहुत छोटी आयु में अहमदियत में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ मिली। बड़ी सब्र करने वाली शुक्र करने वाली, नमाज़ रोज़े की पाबंद, दीनदार, गरीबों का ख्याल रखने वाली, मेहमान नवाज़ और सादगी पसंद महिला थीं। मरहूमा के पति मुबल्लिग़ सिलसिला थे। कई कई दिन दौरों की वजह से बाहर रहते थे लेकिन मरहूमा में हमेशा शुक्रगुज़ारी थी। कभी शिकवा नहीं किया। पीछे रहने वालों में में दो बेटे और पाँच बेटियां शामिल हैं। मरहूमा मूसिया भी थीं। आपके बड़े बेटे के महमूद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला थे जो 54 वर्ष की उमर में गुर्दे के फ़ेल होने की वजह से वफ़ात पा गए थे। उनके छोटे बेटे भी मुअल्लिम सिलसिला हैं और पांचों बेटियां भी मुरब्बियान से ब्याही गई हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन मलिक सुलतान रशीद ख़ान साहब कोट फ़तह ख़ान का है। यह साबिक़ अमीर ज़िला अटक थे। मलिक सुलतान रशीद ख़ान साहब 23,22 अगस्त की मध्य की रात को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके पिता कर्नल मलिक सुलतान मुहम्मद ख़ान साहब ने तेईस वर्ष की आयु में 1923 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत की थी। अपने ख़ानदान में अकेले अहमदी थे। फिर उनकी शादी आयशा सिद्दीक़ा साहिबा जो चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब सयालओ की बेटी थीं उनसे हो गई। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ही यह शादी करवाई थी। सुलतान रशीद साहिब के दादा का नाम मलिक सुलतान सर्खू ख़ान था। उन्हें बर्तानवी बादशाह के दरबार में नुमायां स्थान हासिल था। दरबार में कुर्सी दी जाती थी। उन्हें अपने बेटे मलिक सुलतान मुहम्मद ख़ान साहब के चार साल के बाद अहमदियत क़बूल करने की सआदत नसीब हुई।

मलिक सुलतान रशीद ख़ान साहब की जमाअती ख़िदमात जो हैं इस तरह हैं कि उनको 96 ई. से लेकर 99 ई. तक और फिर 2005-ई. से 2014 ई. तक अमीर ज़िला अटक ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। वफ़ात के वक़्त भी कोट फ़तह ख़ान के सदर जमाअत थे। साबिक़ गवर्नर मग़रिबी पाकिस्तान अमीर मुहम्मद ख़ान के यह रिश्तेदार थे लेकिन वह दुनियादारी में पड़ा हुआ ख़ानदान था और उनके पिता ने अहमदी होने के बाद बिल्कुल दुनिया-दारी को छोड़ा तो नहीं लेकिन दुनिया में रहते हुए दीन को मुक़द्दम करने वालों में से थे और यही ख़ुसूसीयत मलिक सुलतान रशीद ख़ान साहब की भी थी। उन्होंने पहले शुरू में 1/10 हिस्से की वसीयत की। बाद में 1/7 हिस्सा की वसीयत कर दी और फिर हिस्सा जायदाद भी अदा किया। जायदाद पर मेरा ख़्याल है कि शायद 1/10 हिस्से की वसीयत थी और बाक़ी आमद पर 1/7 हिस्सा की। उनकी पत्नी राशिदा स्याल कहती हैं कि ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने एक दफ़ा मुझे तहरीर फ़रमाया कि तुम्हारे अब्बा अहमदियत के लिए एक नंगी तलवार थे और तुम्हारे भाईयों में भी यही रंग पाया जाता है। फिर मलिक सुलतान रशीद साहिब के बारे में कहती हैं कि हमारे भाई का ख़िलाफ़त से बहुत ही गहरा ताल्लुक़ था। ख़लीफ़तुल मसीह के हर हुक्म की फ़ौरी तामील बजा लाते। अल्लाह तआला के फ़ज़ल-ओ-करम से वह ख़िलाफ़त के विश्वासीर ख़ादिम रहे और कामिल लगन के साथ ख़िदमात बजा लाते रहे। रूहानियत भी उनमें कूट कूट कर भरी हुई थी। जब कोई आप को देखता तो महसूस करता कि उनका इस दुनियावी ज़िंदगी से कोई सम्बन्ध नहीं है। बहुत ज़्यादा विनम्रता इख़तियार करने वाले थे। अल्लाह तआला से अपने ताल्लुक़ के बारे में ज़्यादा बातें नहीं करते थे लेकिन अल्लाह तआला से बहुत ताल्लुक़ था। उनके दिन और रात हर एक के लिए दुआओं में भरे हुए थे ख़ाह वे दोस्त हो या रिश्तेदार या अजनबी। दोस्तों, ख़ानदान और ग़ैरों में से कोई एक भी ऐसा नहीं जो कभी उनके दरवाज़े से ख़ाली हाथ वापस गया हो। उनकी विशेषताओं का कई अफ़राद ने नाजायज़ फ़ायदा भी उठाया और उनसे किसी को भी इंकार नहीं होता था।

कहती हैं एक महिला मेरी भांजी के पास आई। वह कहने लगी कि इन ज़रूरतमंद घरों का क्या बनेगा जहां केवल सुलतान रशीद साहिब के पैसों से चूल्हे जल रहे थे? अर्थात कि खाना गुज़ारा उनका सुलतान रशीद साहिब की सहायता से होता था। कहती हैं उन्होंने किस क़दर सख़ावत का मुज़ाहरा किया हमें उस का हक़ीक़ी इदराक नहीं है। कहती हैं मेरी भांजी ने एक दिन उनसे पूछा कि आप जो लोगों की इतनी ख़िदमत करते हैं तो क्या लोग उस की क़दर करेंगे और याद रखेंगे तो आपने कहा कि शायद मुझे याद न रखें लेकिन मेरी नियत केवल यह है कि अल्लाह तआला मेरे से राज़ी हो जाए। उनकी एक बहन नईमा साहिबा कहती हैं मेरे भाई मैं तब्लीग़ का बहुत जज़बा था। कई सईद रूहों की हिदायत का कारण बने। हर आने जाने वाले के साथ तब्लीग़ का अवसर निकाल लेते थे। जमाअत के अतिरिक्त दोस्त अक्सर शाम को आ जाते और घंटों वफ़ात मसीह पर बेहस होती हालाँकि इस में ख़तरा भी था। इबादत के ज़ौक़-ओ-शौक़ का भी अजीब रंग था। आम तौर पर कमरा बंद कर के तन्हाई में अपने रब से राज़-ओ-नयाज़ करते। अल्लाह तआला ने स्वप्न और कशूफ़ से भी उन्हें नवाज़ा। एक दफ़ा ऐबटाबाद में गरमियों के लिए गए। अचानक एक माली परेशानी से दो-चार हो गए। दुआ के सिवा कुछ नहीं कर सकते थे। कहती हैं कि सुबह सैर के लिए घने दरख़्तों के एक झुण्ड के पास से गुज़रे तो एक बुलंद और साफ़ आवाज़ आई। لَاتَقْنَطُوْا مِنْ رَحْمَةِ اللّٰهِ۔

ज़ुबैरी साहिब साबिक़ अमीर ज़िला अटक की बेगम ने उनकी पत्नी को बताया, कहती हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे के ज़माने में ज़िलई मीटिंग के लिए उनके हाँ मुक़ीम थे तो चेहरे पर कुछ-कुछ परेशानी सी थी। वजह पूछने पर बताया कि एक तक़रीर करनी है लेकिन तैयारी बिल्कुल नहीं हो सकी। दूसरे दिन सुबह बड़े हश्शाश बश्शाश थे। नाशते के लिए आए तो कहने लगे कि रात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिल्स रहमहुल्लाह अल्लाह तआला ख़ाब में आए और सारी तक़रीर कुछ ही देर में उन्होंने लिखवा दी। अलहमदो लिल्लाह मेरी तक़रीर तैयार हो गई है। अल्लाह तआला पर तवक्कुल का यह आलम था कि गांव में तन-ए-तन्हा दुश्मन में घिरे हुए कमाल इतमीनान से साल-हा-साल ज़िंदगी बसर की। न कोई डर था न घबराहट। बेहद बहादुर थे। कहते थे हुक्म इलाही के बग़ैर तो पत्ता भी नहीं हिल सकता। एक दफ़ा उनके मुलाज़िम ने किसी सवाली को वापस करना चाहा तो उसे समझाया कि अगर अल्लाह तआला मुझे किसी का वसीला बनाना चाहता है तो इस को लौटाने वाला मैं कौन होता हूँ। हर किस्म की इल्मी गुफ़्तगु की महारत रखते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब का कई बार अध्यन कर चुके थे। माशा अल्लाह अत्यधिक विशेषताओं के हामिल वजूद थे। पाबंद नमाज़ रोज़े, तहज्जुद गुज़ार, दुआगो और निहायत हकीमाना अंदाज़ में बात करने वाले इन्सान थे और हर बात को तब्लीग़ पर ख़त्म किया करते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन आदरणीय अब्दुल कय्यूम साहिब इंडोनेशिया है। 25 अगस्त को उनकी बयासी साल की उमर में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह मौलाना अब्दुल वाहिद साहिब समाटरी मरहूम जो ग़ैर हिन्दुस्तानी पाकिस्तानी पहले मुबल्लिग़ थे उनके बेटे थे। इंडोनेशिया के एक प्रसिद्ध तकनीकी स्कूल से उन्होंने कैमिकल इंजीनियरिंग में बैचलर की डिग्री हासिल की। फिर सरकारी स्कॉलरशिप पर आला तालीम के लिए फ्रांस गए और पैट्रोलियम इकनॉमिक्स में वहां मास्टर्ज़ की डिग्री हासिल की। फिर मिनिस्ट्री आफ़ अनर्जी और मिनरल रिसोर्सज़ (ministry of energy and mineral resources) में मुलाज़िम हुए। वहां मुख़्तलिफ़ ओहदों पर फ़ायज़ रहे। रिटायर्ड होने के बावजूद अपनी फ़ील्ड के माहिर के तौर पर उनसे काम लिया जाता था। फिर तहत्तर वर्ष की उमर में बड़ी मेहनत से उन्होंने यूनिवर्सिटी आफ़ इंडोनेशिया से कैमीकल इंजनीयरिंग में पी.एच.डी की डिग्री भी हासिल कर ली। उन्हों ने मुल्क के लिए भी बहुत नुमायां कारनामे सरअंजाम दिए हैं। 73 ई. में उन्होंने गर्वनमैंट को द्रवित नेचुरल गैस (liquified natural gas) के बारे में एक फ़ार्मूला तजवीज़ किया और कहते हैं उस वक़्त से अर्थात 1974 ई. से ले के 2000 ई. तक हुकूमत को इस की वजह से एक सौ दस बिलीयन डॉलरज़ का मुनाफ़ा हुआ। बहरहाल अहमदी तो हर जगह मुल्क-ओ-क़ौम की ख़िदमत करने के लिए हरवक़त तैयार रहता है लेकिन इंडोनेशिया में भी मुल्ला के ज़ेर-ए-असर कुछ क्षेत्रों में अहमदियत की मुख़ालिफ़त बहुत ज़्यादा हो जाती है लेकिन फिर भी हमारा काम तो यही है कि मुल्क से वफ़ादार रहें। उनको सिविल सेवक (civil servant) के लिए मुल्क का सबसे बड़ा ऐवार्ड भी

मिला। 2005 ई. में दूसरा बड़ा ऐवार्ड मिला जो इंडोनेशियन गर्वनमैंट फ़ौज से बाहर विभाग में बहुत ज़्यादा नुमायां कारनामें सरअंजाम देने वालों को देती है और उनके जो हीदिन होते हैं उनको एक क़ब्रिस्तान में जहां एक मिल्ट्री ceremony होती है इस में दफ़न किया जाता है। बहरहाल मरहूम ने क्योंकि वहां दफ़न नहीं होना था इसलिए उनकी वफ़ात पर जो मिल्ट्री सिरमनी (ceremony) थी वह अब मक़बरा मोसियान पारोइंग (parung) में पारूंग हुई और वहां उनको सम्मान के साथ दफ़न किया गया।

बहुत प्यार करने वाले थे और अपने बहन भाईयों का बहुत ख़्याल रखते थे। उनके पिता ने नसीहत की थी कि बहन भाईयों का ख़्याल रखना और हमेशा इस पर उन्होंने अमल किया। मुरब्बियान और वाकफ़ीन ज़िंदगी के साथ निहायत सम्मान और एहतिराम से पेश आते थे। उनके छोटे भाई बासित साहिब मुरब्बी सिलसिला भी हैं और इंडोनेशिया के अमीर जमाअत भी हैं। अधीनों के साथ भी उनका बड़ा अच्छा सुलूक होता था। उनके एक अधीन ने कहा कि नौ साल की उमर से मैं मरहूम की ज़ेरे कफ़ालत रहा हूँ, स्कूल की फ़ीस इत्यादि की ज़रूरियात मरहूम ने ही अदा कीं। अच्छे सुलूक की वजह से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब पढ़ने के बाद मैंने भी बैअत कर ली। मरहूम की मेहरबानी और सख़ावत बहुत आला दर्जा की थी। हमेशा लोगों के साथ एक जैसा सुलूक करते। कभी अपने आप पर फ़ख़र नहीं किया और न ही अपने ओहदे पर फ़ख़र किया। सरकारी गैस कंपनी में उनके साबिक़ कारकुन थे वह कहते हैं बहुत ही ज़हीन, साबित-क़दम और मेहनती थे। वह बहुत ही प्रसिद्ध और बड़े अफ़्सर थे लेकिन इस के बावजूद बहुत ही आजिज़ी रखने वाले थे। ख़िलाफ़त से और जमाअत से निहायत मुहब्बत करने वाले थे। जब भी जमाअत को क़ुर्बानी की ज़रूरत होती या मुश्किलात का सामना करना पड़ता तो वह निहायत ख़ुलूस-ए-दिल से सहायता करते थे। हज़रत ख़लीफ़ा राबे रहमहुल्लाह इंडोनेशिया गए हैं तो उन्होंने उनके घर में ही क़ियाम फ़रमाया था और सरकारी मुलाज़िम की हैसियत से काम करते हुए मरहूम ने यह कभी नहीं छुपाया कि वह अहमदी हैं और न बाद में। हालाँकि मुख़ालिफ़त तो बाद में ज़्यादा शुरू हो गई थी लेकिन कभी अपना अहमदी होना नहीं छुपाया। अपने दोस्तों को तब्लीग़ करने में मुस्तइद थे और एक प्रसिद्ध अहमदी शख़्सियत के तौर पर जाने जाते थे। एक दफ़ा एक बिजली कंपनी के सी. ई. ओ. ने वज़ीर को कहा कि डैम का पानी कम हो रहा है और कुछ अरसा तक यही हाल रहा तो बिजली बंद करनी पड़ेगी। तो मिनिस्टर साहिब को उनकी दुआओं पर कुछ यक़ीन था। उन्होंने कहा कि क़य्यूम साहिब के पास जाओ। तो यह क़य्यूम साहिब के पास आए कि मेरी सहायता करें तो उन्होंने कहा अच्छा मेरी सहायता तुमने मेरे से सहायता लेनी है तो मेरे माध्यम से फिर ख़लीफ़तुल मसीह को, हमारे इमाम को ख़त लिखो और उसने ये ख़त लिखा कि दुआ करें ये हो जाए। कहते हैं मंगल को यह ख़त उन्होंने दिया और अगले दिन ही मूसलाधार बारिश हो गई और डैम भर गया।

जमाअत के लिए उनकी ख़िदमात यह हैं कि पारोइंग में मुख्यालय कम्पलैक्स की तामीर में कई रुकावटों का सामना था। उस वक़्त के रईस अल् तबलीग़ महमूद चीमा साहिब थे। उन्हों ने वर्णन किया तो उन्होंने कहा कि फ़िक्र न करें। माली मुआमलात में कोई रोक थी, रक़म की कमी थी। उन्होंने कहा कि मैं सारा ख़र्च अदा करूँगा और सारा ख़र्च अदा किया और दो सालों के अंदर एक बड़ी मस्जिद वहां बन गई। मर्कज़ी गेस्ट हाऊस और मुबल्लग़ीन के क्वार्टर्ज़ की तामीर का ज़्यादा-तर हिस्सा भी उन्होंने अदा किया। चार अदद क्वार्टर्ज़ के सौ फ़ीसद तामीराती अख़राजात मरहूम की तरफ़ से थे। एम.टी.ए. इंडोनेशिया के आरम्भिक दिनों में क़रीबन समस्त अख़राजात मरहूम और उनकी पत्नी ने बर्दाश्त किए। मग़रिबी जकार्ता में स्थित स्टूडियो के लिए उनका घर इस्तिमाल किया जाता था। कारकुनान के अलाउंस की अदायगी के अख़राजात भी मरहूम की तरफ़ से थे। इंडोनेशिया में होम्योपैथी के आरम्भिक दिनों में अदवियात से लेकर क्लीनिक की जगह तक के समस्त अख़राजात मरहूम की फ़ैमिली ने बर्दाश्त किए। वाहिद सीनीयर हाई स्कूल के आरम्भिक तामिराती अख़राजात भी मरहूम के ख़ानदान के अतयात से आए। इस में ज़्यादा तर हिस्सा इंही का होता था। क़ादियान में इंडोनेशियन गेस्ट हाऊस सराय अय्यूब जो ज़ेरे तामीर है इस के लिए भी उन्होंने नुमायां माली क़ुर्बानी की। मरहूम ने मर्कज़ के गर्द काफ़ी ज़मीन ख़रीदी। फिर रिहायश के लिए जमाअत को दे दी। मासूम अहमद साहिब प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया लिखते हैं कि कई दफ़ा जब मीटिंग होती थी तो आमिला में बड़ी लंबी बेहस चल जाती थी। लेकिन अमीर साहिब जो उनके छोटे भाई भी हैं अगर वह कहते थे कि अब इस मुआमले को ख़त्म करें तो फ़ौरी तौर पर चुप हो जाते थे और अपनी मज़ीद राय नहीं देते थे। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन आदरणीय दाऊदा रज़्ज़ाक़ी यूनुस (daouda razaki younus) साहिब बेनिन का है। 27 अगस्त को चोहत्तर वर्ष की उमर में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम बेनिन के पहले अहमदियों में से थे। अपने घर में अकेले अहमदी थे। 1967 ई.में अपने बड़े भाई ज़िकरुल्लाह दाऊद साहिब मरहूम जो बेनिन के सबसे पहले अहमदी थे उनके माध्यम अहमदियत क़बूल की। उनके बीवी बच्चे अहमदी नहीं हैं। अल्लाह तआला उनको भी तौफ़ीक़ दे।

मियां क़मर अहमद अमीर मिशनरी इंचार्ज लिखते हैं कि फ़ौत होने से कुछ दिन पूर्व क़बूलीयत अहमदियत का वाक़िया मुझे बताया कि जब मेरे बड़े भाई ज़िकरुल्लाह दाऊदा जो नाईजीरिया में अहमदियत क़बूल कर चुके थे उनके अहमदियत क़बूल करने की ख़बर मिली और साथ ही लोगों की अहमदियत के बारे में तरह तरह की बातें सुनी तो मैं उनको मिलने गया। मैंने उनको اَلَیْسَ اللہ की अँगूठी पहने देखी तो मैंने फ़ौरन अपने बड़े भाई से पूछा कि यह अँगूठी कैसी पहन रखी है और आपके मज़हब में इस की क्या हैसियत है? तो उन्होंने बताया कि इस पर क़ुरआन-ए-मजीद की आयत लिखी है। इस का मतलब है क्या अल्लाह तआला अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं और जमाअत अहमदिया के बानी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने हमें यही तालीम दी है। फिर कहते हैं मैंने भाई से पूछा कि क्या अहमदियत इस्लाम से कोई मुख़्तलिफ़ मज़हब है? उन्होंने बताया कि हम यह कहते हैं कि जिस इमाम का तुम इंतिज़ार कर रहे हो वह आ गया है और यही सच्चा इस्लाम है। फिर कहते हैं इस बात को सुनके मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब का अध्यन किया और इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी का अध्यन किया और मैंने अहमदियत क़बूल कर ली।

बेनिन के पढ़े लिखे अहमदियों में उनका शुमार होता था। फ्रांस से बिज़नस मैनिजमंट में उन्हों ने मास्टर्ज़ की थी। बेनिन के बिजली और पानी के नैशनल डायरेक्टर के ओहदे से रिटायर्ड हुए। निहायत प्रभावी, दाढ़ी वाले, बावक़ार शख़्सियत थे। नमाज़ों के पाबंद, तहज्जुद गुज़ार, एक नेक और मुख़लिस इन्सान थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलिफ़ा से बेपनाह मुहब्बत थी। उनकी कुतुब का अध्यन आपका दिनचर्या था। बहुत से जमाअती ओहदों पर फ़ायज़ रहे और जमाअत बेनिन के लिए आपकी बहुत सी ख़िदमात हैं। यह वहां पहले चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़रस्ट थे। शुरू से इस ओहदे पर रहे। यह मैडीकल केम्पस लगाया करते थे और ख़ुद डाक्टरज़ के साथ जा कर सारा सारा दिन बग़ैर कुछ खाए इन्सानी ख़िदमत में मसरूफ़ रहते थे।

डाक्टर क़मर अहमद अली साहिब कहते हैं कि मुझे बेनिन में बतौर डाक्टर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली वह कहते हैं कि मैडीकल केम्पस के दौरान ख़ाह थकावट होती या सफ़र की वजह से लेट होते, हमेशा मैंने उनको रात को लंबी तहज्जुद पढ़ते देखा है। जब भी आँख खुली उनको तहज्जुद पढ़ते देखा ।

मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब ज़फ़र मुबल्लिग़ सिलसिला कह रहे हैं कि जब भी कोई तक़रीर करते तो बड़े ही दर्द के साथ शर्तों बैअत पर अमल करने की तलक़ीन करते और कहते हैं विनीत को कहा करते थे कि जब तक हर अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इलहाम अर्थात अली اَلَیْسَ اللہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ को नहीं समझता तो वह भौतिकवादी है।

फिर अमीर साहिब लिखते हैं 2006 ई. में जमाअत को तीस एकड़ का एक स्थान प्रदान किया। कहते हैं कि 2021 ई. में मैं ने ख़ाहिश ज़ाहिर की कि बेनिन में मद्रस्स्तुल हिफज़ की बिल्डिंग बनवा कर जमाअत को तोहफ़ा पेश करें तो उन्होंने बड़ा मुस्कुरा कर कहा कि इंशा-ए-अल्लाह, और यह शुरू भी हो गया है। कहा करते थे कि अगर जमाअत के बच्चे पढ़ लिख जाएं तो बेनिन की जमाअत अफ़्रीक़ा की बड़ी जमाअतों में से होगी। आप बच्चों को जमाअत की क़ीमती किताबें बतौर इनाम दिया करते थे। अनाथालय बैतुलअकराम में गए तो डाक्टर वलीद साहिब जो वहां के इंचार्ज हैं उनको नसीहत की कि इन बच्चों की सेहत और सैक्योरिटी का बहुत ख़्याल रखें क्योंकि यह हमारी जमाअत और क़ौम के बच्चे हैं और हम सब उनके माता पिता हैं और दुआएं भी दें। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, इन सब के दर्जात बुलंद फ़रमाए। जैसा कि मैंने कहा कि नमाज़ के बाद उनके जनाज़ा ग़ायब अदा करूँगा।

☆ ☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-23)

"मस्जिद बैयतुलसलाम" के नींव के पत्थर के अवसर पर हुज़ूर अनवर के भाषण पर मेहमानों के विचारों का प्रकटन

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

9 जून 2015 ई. दिन सोमवार (शेष रिपोर्ट)

अल्लाह तआला दोनों ओर से इस की तौफ़ीक़ दे। जिस भी धर्म से सम्बन्ध रखने वाले हों, मुस्लमान हों, ईसाई हों, यहूदी हों या किसी भी धर्म के हों इन्सानी क़दरों को सामने रखते हुए एक दूसरे की भावनाओं का भी खयला रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : एम पी ए साहब ने भी बताया कि अमन का संदेश बड़ी एहमीयत रखता है और अमन के संदेश वाले को यहां बहुत स्वागतम कहा जाता है। यह केवल यहीं की बात नहीं। मेरे ख्याल में कि संसार में हर जगह जहां अक़लमंद इन्सान रहते हैं, अमन के संदेश को, मुहब्बत के संदेश को स्वागतम कहा जाता है और कहा जाना चाहिए। तो बहर हाल इस हवाला से भी मैं शहर के लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप लोगों ने बर्दाश्त और अमन का प्रदर्शन करते हुए हम लोगों को, जमाअत अहमदिया के सदस्य को, जो अमन का प्रचार करने वाले हैं, मुहब्बत का प्रचार करने वाले हैं अपने शहर में इबादत करने के लिए जगह प्रदान करने की आज्ञा फ़रमाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : फिर पड़ोसी शहर के मेयर ने भी अपने विचारों का प्रकटन किया। एक बात उन्होंने यह भी कही या जो अनुवाद में सुनी गई कि धर्म की इतनी एहमीयत नहीं है बल्कि अमन और मुहब्बत की फ़िज़ा की ज़्यादा एहमीयत है। आपस के जो संबंध हैं उनकी ज़्यादा एहमीयत है। निश्चित तौर पर मेरे निकट तो धर्म की एहमीयत है परन्तु इस के साथ ही मैं इस बात पर भी विश्वास रखता हूँ और इसी की मैं हमेशा जमाअत को तलक़ीन भी करता हूँ और यही इस्लामी शिक्षा भी है कि इन्सानी क़द्रें सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। पहले भी मैंने वर्णन किया है कि यदि कोई धर्म इन्सानी क़दरों का ख्याल नहीं रखता तो धर्म अपना धर्म होने का हक़ भी अदा नहीं कर रहा और ऐसा धर्म फिर बेफ़ाइदा है जो दूसरों के हुक़ूक़ अदा नहीं करवाता। अतः कई जगह कई दफ़ा ऐसे अवसर पैदा हो जाते हैं कि इन्सानों के हुक़ूक़ अदा करना इबादत बन जाता है और यही धर्म की शिक्षा है। यही मेरे धर्म की शिक्षा है कि इबादत केवल मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ना नहीं बल्कि इन्सानों की सेवा करना और उनके हक़ अदा करना भी इबादत है। और जो हक़ अदा नहीं करते केवल यह समझते हैं कि मस्जिद में आ गए और नमाज़ें पढ़ लीं तो क़ुरआन करीम कहता है कि ऐसे नमाज़ पढ़ने वालों की इबादतें स्वीकार नहीं होतीं। तो अल्लाह तआला ने हमें यह शिक्षादी है कि यदि तुम दोनों तरह के हुक़ूक़ अदा नहीं करोगे अपने पैदा करने वाले का हक़ और उस की मख़लूक़ का हक़ तो फिर तुम्हारी इबादतें बेफ़ाइदा हैं और तुम्हारे धर्म की शिक्षा बेफ़ाइदा है और तुम्हारा अपने आपको किसी धर्म से सम्बंधित करना बेफ़ाइदा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अतः यह वह शिक्षा है जिसका जमाअत अहमदिया संसार मै हर जगह प्रचार करती है और इसी कारण से हम "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" की बात करते हैं और यही चीज़ है जिस के लिए हम मस्जिदें भी बनाते हैं ता कि मस्जिदें बनने के बाद जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का परिचय मज़ीद बढ़े और मुझे आशा है इंशा अल्लाह तआला कि यह परिचय इस मस्जिद के बनने के बाद और बढ़ेगा और जो लोगों के दिलों में मामूली संदेह हैं वह भी इंशा अल्लाह तआला दूर हो जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अल्लाह तआला आप सबको भी प्रतिफल दे जिन्हों ने सहायता की और अल्लाह तआला इन अहमदियों को भी तौफ़ीक़ दे कि जब यह मस्जिद बन जाए तो इस मस्जिद का हक़ अदा करने वाले हों और यहां के लोगों के हुक़ूक़ अदा करने वाले हों और इन्सानियत को हमेशा प्राथमिकता देने वाले हों। तभी उनकी इबादतें भी स्वीकार होंगी। अल्लाह तआला सबको तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। जज़ाकल्लाह।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण दो बजे तक जारी रहा। भाषण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ उस जगह तशरीफ़ ले गए जहां मस्जिद बैयतुल सलाम का नींव का पत्थर रखा जाना था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दुआओं के साथ बुनयाद की ईंट रखी। इस के बाद हज़रत बेग़म साहिबा ने मस्जिद की बुनियाद की ईंट रखी। फिर इस के बाद इस तरतीब के अनुसार निमंलिखित जमाअती अधिकारियों और लोगों को एक एक ईंट रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

1- आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊस साहब नैशनल अमीर जर्मनी
2- काओनटी कमिशनर Mr Thomas Gemke
3- मेंबर आफ़ पार्लियामेंट Mr Michael Scheffler
4- Hemer शहर के मेयर Mr Machael Esken
5- विनीत अब्दुल माजिद ताहिर ऐडीशनल वकील तब्शीर
6- आदरणीय हैदर अली ज़फ़र साहब मिशनरी इंचार्ज जर्मनी
7- आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहब ऐडीशनल वकीलुल माल
8- आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहब प्राइवेट सेक्रेटरी
9- आदरणीय सय्यद सलमान शाह साहब रीजनल मुबल्लिग़
10- आदरणीय चौधरी इफ़्तिख़ार अहमद साहब सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह जर्मनी11- आदरणीय हसनात अहमद साहब सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी12- आदरणीया अम्तुल हई साहिबा सदर लजना इमाल्लाह जर्मनी
13- आदरणीय हिदायतुल्लाह शाद साहब नैशनल सेक्रेटरी वक़्फ़-ए-क़ुरआन वक़्फ़-ए-आरज़ी14- आदरणीय चौधरी अज़मत अली साहब रीजनल अमीर
15- आदरणीय रऊफ़ अहमद साहब सदर जमाअत अज़ालोन
16- आदरणीय ताहिर महमूद साहब लोकल सेक्रेटरी माल और सेक्रेटरी ज़याफ़त
17- आदरणीय अब्दुल मालिक साहब मेंबर जमाअत अज़ालोन (मुर्दों मेंसे सीनीयर सिटीज़न के नुमाइंदे)
18- आदरणीय मुहम्मद सादिक़ नासिर साहब ज़ईम अन्सारुल्लाह अज़ालोन
19- आदरणीय बशारत महमूद साहब क़ाइद मज्लिस अज़ालोन
20- आदरणीया शहनाज़ अख़तर साहिबा सदर लजना अज़ालोन
21- आदरणीया बशीर बेग़म साहबा मेंबर लजना जमाअत अज़ालोन (महिलाओं में से सीनीयर सिटीज़न की नुमाइंदे) 22- प्रिय नायला महमूद साहिबा, वाकिफ़े नौ
23- प्रिय फ़ारान अहमद मलिक साहब, वक्फे नौ

नींव के पत्थर के समारोह के अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ लजना की मारकी में तशरीफ़ ले गए जहां बच्चियों ने दुआइया नज़्में प्रस्तुत कीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अनुकंपा करते हुए बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मारकी में तशरीफ़ ले आए जहां स्थानीय जमाअत ने रिफ्रेशमेंट का प्रबन्ध किया हुआ था।

रिफ्रेशमेंट के प्रोग्राम के बाद लोकल इन्तेज़ामिया और आमिला के सदस्य ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद दो बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ यहां से वापस होटल तशरीफ़ ले आए और कुछ देर वहां होटल में क़ियाम फ़रमाया। दोपहर के खाने का प्रबन्ध भी इसी होटल में किया गया था।

"मस्जिद बैयतुलसलाम" के नींव के पत्थर के अवसर पर हुज़ूर अनवर के भाषण पर मेहमानों के विचारों का प्रकटन

मस्जिद बैयतुल सलाम के नींव के पत्थर के समारोह के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जो भाषण फ़रमाया उस का मेहमानों पर गहरा प्रभाव हुआ और कुछ मेहमानों ने सब के समक्ष अपने विचारों का प्रकटन भी किया।

एक साहब ने कहा कि हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व बहुत positive लगा। मैं उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हूँ और आप एक शांति प्रिय व्यक्ति लगते हैं और इस

पृष्ठ 1 का शेष

प्रकार लगता है कि सब के साथ गहरा सम्बन्ध है। जो लोग इस्लाम से नफ़रत करते हैं उन्हें ये बेवकूफ़ाना रवैय्या इख़तियार नहीं करना चाहिए कि बिना मालूमात प्राप्त किए किसी के बारे में कोई ग़लत कल्पना या नफ़रत पैदा कर लें।

एक साहब ने कहा कि हुज़ूर अनवर के व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ हूँ और आपका व्यक्तित्व बहुत सकारात्मक मालूम होता है। परन्तु मुझे यह भी कहना है कि मुझे कभी इस्लाम से कोई मसला नहीं रहा। आपका माटो मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं बहुत महत्वपूर्ण है।

स्थानीय हस्पताल के CEO ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व अत्यधिक positive मालूम होता है और आपसे इन्सानों का क़ुरब प्रकट होता है। आपकी ओर से प्रस्तुत करदा इस्लामी शिक्षा इस्लाम के बिल्कुल बर-ख़िलाफ़ है जो मीडिया में दिखाया जाता है। मुझे हुज़ूर अनवर के भाषण में से विशेषता ये दो बातें अच्छी लगीं कि यहां के रहने वाले सब मुस्लमान और ईसाई इत्यादि जर्मन हैं और उन में कोई मतभेद नहीं। दूसरी बात यह अच्छी लगी कि जब तक पहले हिस्सा अर्थात इन्सानों से सम्बन्ध को सही नहीं करोगे तब तक दूसरा हिस्सा अर्थात ख़ुदा तआला से सम्बन्ध और उस की इबादत करने का कोई लाभ होगा।

एक और मित्र Muhs Joseph ने कहा कि : हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व अत्यधिक शांति प्रिय और सम्मानीय है। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि आप अपने ख़लीफ़ा की इज़्ज़त बहुत ज़्यादा करते हैं। हुज़ूर अनवर के भाषण में यह बात मुझे बहुत पसंद आई कि यहह क्षेत्र तो सुन्दर है ही परन्तु स्वयं सुन्दर इन्सान बन कर इस क्षेत्र को हक़ीक़ी तौर पर सुन्दर करें और क्षेत्र के लिए लाभदायक बनें।

इसी तरह एक महिला Brigitte साहबा कहने लगीं कि : आपका व्यक्तित्व कुछ पोप जैसा अर्थात धार्मिक रहनुमा जैसा लगता है। आपके अंदर एक अजीब ताक़त और कशिश उपस्थित है और आपका एक विशेष सम्बन्ध ख़ुदा तआला से महसूस होताहै। आपके भाषण में से यह बात पसंद आई कि अंदरूनी सुन्दरता हक़ीक़ी है।

शहर की integration ऑफ़िस की मेंबर Erbil Eren साहबा ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि यह फंक्शन सफ़ल था और मुझे आज पता चला कि हाथ न मिलाने के अतिरिक्त समाज को बेहतर करने के लिए अख़लाक़ी तौर पर hand in hand चलने की आवश्यकता है। हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व बहुत हमदर्द व्यक्तित्व लगता है और आपके शब्द बहुत आला थे। विशेषता अंदरूनी सुन्दरता के बारे में।

एक महिलाऔर एक पुरुष पुलिस अफ़्सर भी इस समारोह में शामिल हुए थे। उन्होंने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि

हमें यह बात बहुत अच्छी लगी कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने वहां बैठे-बैठे ही दूसरे मुक़र्ररीन की बातों को नोट किया और इन्ही बातों के हवाले से अपना भाषण फ़रमाया। यहां के मुक़र्ररीन की बातों को नोट कर के उन्हें इस्लाम की सुन्दर शिक्षा के पैराया में वर्णन किया। यही हक़ीक़ी integration है।

महिला पुलिस अफ़्सर ने कहा कि जिस इस्लाम को हम पुलिस वाले देखते हैं इस में तो शिद्दत और सख़्ती पाई जाती है परन्तु मैंने ख़लीफतुल मसीह की इस्लाम के बारे में बातें सुनी हैं और यदि यही इस्लाम है जो ख़लीफतुल मसीह ने प्रस्तुत किया है तो फिर यह इस्लाम निश्चित तौर पर जल्द फैलेगा और इस इस्लाम के विरुद्ध किसी इन्सान के ज़हन में कोई बात नहीं होनी चाहिए।

एक वृद्ध, आदमी जो pirates party के मेम्बर हैं और पार्टी में प्रभाव रखते हैं वह बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के चेहरा पर एक विशेष सुकून और संतुष्टि है। आपकी तक़रीर बहुत उत्कृष्ट थी।

एक मित्र जो old home में रहते हैं और तुर्की जमाअत को भी जानते हैं वह कहने लगे कि तुर्कों ने जमाअत अहमदिया के बारे में हमेशा आरक्षण का प्रकटन किया है परन्तु इस के अतिरिक्त मैं इस समारोह में शामिल हुआ और ख़लीफ़ा का भाषण सुना। मैं इस भाषण से बहुत प्रभावित हुआ। ख़लीफ़ा की ये बात मुझे बहुत पसंद आई कि हम सब मिलकर इन्सानियत की ख़ातिर एक क़ौम बन कर काम करें।

एक पार्टी के मेंबर ने कहा कि जिस तरह यहां स्वयं सेवक के तौर पर काम हुआ है हमारी पार्टी में बड़े बड़े प्रोफैशनल्ज़ भी ऐसा ज़बरदस्त काम नहीं कर सकते।

इसी तरह इस समारोह में शामिल अधिकतर लोगों ने इस बात का प्रकटन किया कि प्रोग्राम का प्रबन्ध बहुत अच्छा था।

vechta शहर में मस्जिद बैयतुल उल-क़ादिर का उद्घाटन।

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल होटल से बाहर पधारे और यहां से vechta के लिए प्रस्थान हुआ iserlohn से vechta का दूरी 201 किलोमीटर की है। लगभग एक घंटा 50 मिनट की यात्रा के बाद छ: बजकर 20 मिनट प rvechta में तशरीफ़ आवरी हुई जहां स्थानीय लोगों, पुरुषों महिलाओं और बच्चे, बच्चियों ने अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा। बच्चे और बच्चियां बुलंद आवाज़ में दुआइया नज़्में और स्वागतम के तराने पढ़ रहे थे। लोगों ने नारे बुलंद किए और महिलाएं दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर रही थीं।

जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल गाड़ी से बाहर पधारे तो रीजनल अमीर आदरणीय मुबश्शिर अहमद साजिद साहब, सदर जमाअत नसीर अहमद बट साहब और रीजनल मुबल्लिग़ सिलसिला आदरणीय उस्मान नवेद साहब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल को स्वागतम कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। इस अवसर पर vechta शहर के डिप्टी मेयर Mr. CLAUS DALINGHAUS और ज़िला मेंबर पार्लियामेंट Mr. STEPHAN SIEMER ने भी हुज़ूर अनवर का स्वागत करते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती का निक़ाब हटाया और दुआ करवाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले आए और नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई जिसके साथ इस मस्जिद का उद्घाटन किया गया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी सेहन में चीरी का पौधा लगाया और vechta शहर के डिप्टी मेयर Mr. CLAUS DALINGHAUS ने नाशपती का पौधा लगाया।

मस्जिद की उद्घाटन के समारोह के हवाला से मर्दों और महिलाओं के लिए अलग अलग अलग मार्कीज़ लगाई गई थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मर्दाना मारकी में तशरीफ़ ले आए जहां "मस्जिद बैयतुल क़ादिर" के उद्घाटन समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो मलिक उसमान नवेद साहब ने की और इस का जर्मन भाषा में अनुवाद आदरणीय रमीज़ अहमद साहब ने किया।

अमीर साहब जर्मनी का ऐडरैस

इस के बाद आदरणीय अमीर साहब जर्मनी ने अपना परिचयात्मक भाषण प्रस्तुत किया और VECHTA शहर का परिचय करवाते हुए कहा :

यह शहर वफ़ाक़ी स्टेट NIEDERSACHSEN के पश्चिम में 32 हज़ार की आबादी पर आधारित है और यह VECHTA ज़िला का सबसे बड़ा शहर है। इस शहर की तारीख़ ग्यारहवीं सदी में जा मिलती है जब उत्तरी जर्मनी के दाख़िली रास्तों में से एक रास्ता पर क़िला का निर्माण किया गया। इस क़िला के इर्द-गिर्द फिर आहिस्ता-आहिस्ता लोग आकर आबाद होना शुरू गए।

सोलहवीं सदी में कुछ हमलों और तीस साला जंग और इसके अतिरिक्त एक मर्तबा एक बड़े पैमाना पर लगने वाली आग ने इस शहर के एक बड़े हिस्सा को तबाह कर दिया। उस के बावजूद VECHTA शहर के लोगों ने उसे फिर आबाद किया।

यह शहर घुड़सवारी के हवाला से भी प्रसिद्ध है और एक लोक मेला के कारण से भी प्रसिद्ध है जो 1924 से प्रत्येक वर्ष मौसिम-ए-गर्मा में यहां आयोजित किया जाता है।इस शहर में जमाअत अहमदिया का क़ियाम 1986 में हुआ। आदरणीय लईक अहमद मुनीर साहब मुबल्लिग़ सिलसिला यहां आए और जमाअत का क़ायम हुआ जो आरंभ में सात सदस्य पर आधारित था। यह पर्याप्त active रहे और अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक बड़ी मज़बूत और काम करने वाले जमाअत बन चुकी है। ख़िदमत-ए-ख़लक़ के हवाले से और पौधे लगाने के हवाले से इस जमाअत ने बहुत काम किया है। यह जमाअत तब्लीग़ी प्रोग्रामों, तब्लीग़ी मजालिस के आयोजित करने और बुक स्टाल लगाने में बहुत काम करने वाले है।

मस्जिद की ज़मीन 2010 में ख़रीदी गई थी। इस प्लाट का रकबा 1998 मुरब्बा मीटर है। यह प्लाट 55 हज़ार यूरो में ख़रीदा गया था।

ग्यारह अक्तूबर 2011 को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस मस्जिद की नींव का पत्थर रखा था। अक्तूबर 2013 ई. में यहाँ निर्माण का काम शुरू हुआ। मस्जिद के दो हाल हैं और covered एरिया 257 मुरब्बा मीटर है। मस्जिद के मीनार की बुलंदी 9 मीटर है और गुम्बद का क़तर 6 मीटर है। यहां बारह गाड़ियों के लिए पार्किंग की जगह है और आज 9 जून दिन मंगल इस मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

चलता फिरता खाता पीता है और उस पर क़ुदरत के नियमों का वैसा ही प्रभाव होता है। जैसे दूसरे लोगों पर,परन्तु बावजूद उसके भी वह इस दुनिया से अलग होता है। वह तरक़्क़ी करते करते उस स्थान पर जा पहुंचता है जो नबुव्वत का बिन्दु (सार) कहलाता है। और जहां वह ख़ुदा तआला से वार्तालाप करता है। यह वार्तालाप यूं शुरू होती है कि जब वह नफ़स और इसके सम्बन्धों से अलग हो जाता है तो फिर उसका सम्बन्ध अल्लाह तआला ही से होता है और इसी से वह वार्तालाप करता है।

कलाम-ए-नफ़स

इन्सान की हालत ऐसी घटित हुई है कि यह कभी निकम्मा और बेकार नहीं रहता और नफ़स वार्तालाप से भी कभी फ़ारिग़ नहीं होता है। नफ़स और शैतान से ही इस की वार्तालाप शुरू रहती है। यदि कोई और बात करने वाला न हो। कई बार लोग देखते हैं कि वह बिलेकुल ख़ामोश रहता है, परन्तु वास्तव में वह ख़ामोश नहीं होता। इस का सिल्सिला कलाम अपने नफ़स से शुरू होता है और कई बार वह बहुत ही लम्बा होता है। और शैतानी रंग में उसे ख़ुद लम्बा करता है और बेशर्मी से उसे लम्बा होने देता है। यह सिलसिला कलाम कभी वैचारिक दुराचार के रूप में होता है और कभी बेहूदा और झूठी आशाओं के रूप में और इससे वह कभी फ़ारिग़ नहीं रहता। जब तक कि इस सांसारिक ज़िन्दगी को न छोड़ दे। यह भी याद रखो कि इस प्रकार के ख़तरे और विचारों का सिलसिला जो लंबा होने नहीं देता और एक साधारण विचार की तरह आकर दिल से मिट जाते हैं वे माफ़ हैं। परन्तु जब इस सिलसिला को लम्बा करता है और इस पर महानता करता है,तो वे गुनाह हैं और उनका उत्तर देनी पड़ेगा।

जब इन विचारों को जो इन्सान के दिल में पैदा होते हैं वह दूर करता है और उनको लम्बा नहीं होने देता, तो कुछ शक नहीं कि वह माफ़ी के योग्य हैं। परन्तु जब उसके सिल्सिला को लम्बा करने में एक आन्नद पाता है और उस को बढ़ाता जाता है। फिर वह पकड़ के योग्य हो जाते हैं,क्योंकि उन में महानता शामिल हो जाती है

जैसा कि पहले भी वर्णन किया है। इस बात को ख़ूब याद रखो कि कलाम नफ़सी दो प्रकार का होता है। कभी शैतानी जो वैचारिक दुराचार तथा कदाचार के सिलसिला में चला जाता है और आशाओं का एक लम्बे सिल्सिला में पीड़ित होता है। जब तक इन दोनों सिलसिलों में इन्सान फंसा हुआ है, शैतानी दख़ल का उसे अंदेशा है और संभव है कि वह नुक़्सान उठाए और शैतान उसे ज़ख़्मी करे। जैसे कभी कोई मन्सूबा ही बाँधता है कि अमुक़ व्यक्ति मेरी अमुक़ आशा और लक्ष्य में बड़ी रोक है,इस को मारा जाए। उसने मुझे तो कहा है इस का बदला लिया जाए । और इस की नाक काटनी चाहिए इस किस्म के मंसूबे और उधेड़बुन में लगा रहता है। यह मरीज़ सख़्त ख़तरनाक अवस्था में है। वह नहीं समझता है कि नफ़स का मैं क्या नुक़्सान कर रहा हूँ और इससे मेरी अख़लाक़ी और रुहानी कुव्वतों पर किस प्रकार का बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रकार के विचारों से हमेशा बचना चाहिए। जब कभी कोई ऐसा बेहूदा सिलसिला शुरू हो ,अतिशीघ्र उसके दूर करने की कोशिश करो। इस्तिग़फ़ार पढ़ो। लाहौल के माध्यम से ख़ुदा से मदद और सामर्थ्य चाहो और ख़ुदा तआला की किताब के पढ़ने में अपने आपको व्यस्त कर दो और यह समझ लो कि इस सिलसिला से लाभ कुछ नहीं, नुक़्सान ही नुक़्सान है। यदि कोई दुश्मन मर भी जाए तो क्या और ज़िन्दा रहे तो क्या? लाभ तथा हानि का पहुंचाना यह ख़ुदा तआला के अधिकार में है। कोई व्यक्ति किसी को कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। सअदी ने गुलिस्तान में एक कहानी लिखी है कि नौशेरवां के पास कोई व्यक्ति ख़ुशख़बरी लेकर गया कि तेरा अमुक़ दुश्मन मारा गया है और उस का देश और क़िला हमारे क़ब्ज़ा में आ गया है। नौशेरवां ने उसका क्या अच्छा उत्तर दिया।

मरा बमर्ग अदू जाए शादमानी नीस्त
कि ज़िंदगानी मा नीज़ जाविदानी नीस्त

अत: आदमी ग़ौर करे कि इस किस्म के मन्सूबों और उधेड़बुन से क्या लाभ और क्या ख़ुशी। यह सिलसिला तो बहुत ही ख़तरनाक है और इसका ईलाज है तौबा,इस्तिग़फ़ार,लाहौल और ख़ुदा की किताब का अध्ययन, बेकारी और बे-शुग़ली में इस किस्म का सिलसिला बहुत लंबा होता है

दूसरी किस्म कलाम नफ़स की आशाओं के सिलसिले को लम्बा करते रहना है। यह सिलसिला भी चूँकि अकारण इच्छाओं को पैदा करता है और लोभ,ईष्या ,ख़ुदग़रज़ी की बीमारियां इससे पैदा होती हैं। इसलिए जैसे ही यह सिलसिला पैदा हो उसकी सफ़ शीघ्र लपेट दो। मैंने यह कलाम-ए-नफ़स को जो बांटा है ये दोनों किस्में अन्त में इन्सान को हलाक कर देती हैं, परन्तु नबी इन दोनों किस्म के सिलसिला कलाम से पवित्र होता है

नबुव्वत के स्थान की हक़ीक़त

नबुव्वत क्या है? यह एक ख़ुदा तआला द्वारा प्रदत्त जौहर है। यदि कमाने से होता तो सब नबी हो जाते। उनकी फ़ित्रत ही इस किस्म की नहीं होती कि वे इन व्यर्थ कलाम के सिलसिला में पीड़ित हों। वे नफ़सी कलाम करते ही नहीं; दूसरे लोगों में तो यह हाल होता है कि वह इन सिलसिलों में कुछ ऐसे पीड़ित होते हैं कि ख़ुदा का ख़ाना ही ख़ाली रहता है। परन्तु नबी इन दोनों सिलसिलों से अलग हो कर ख़ुदा में कुछ ऐसे गुम होते हैं और उसके वार्तालाप में ऐसे लीन होते हैं कि इन सिलसिलों के लिए उनके दिल तथा दिमाग में समाई और गुंजाइश भी नहीं होती,बल्कि ख़ुदा ही का सिलसिला कलाम रह जाता है। चूँकि वही हिस्सा बाक़ी होता है। इस लिए ख़ुदा उनसे कलाम करता है और वे ख़ुदा को सम्बोधित करते रहते हैं। एकान्त और बेकारी में भी जब ऐसे विचारों का सिलसिला एक इन्सान के अन्दर पैदा होता है। उस वक़्त यदि नबी को भी वैसी ही हालत में देखो ,तो शायद ग़लती और अज्ञानता से यह समझ लो कि अब उसका सिलसिला तो ख़ुदा से कलाम का न होगा,परन्तु नहीं वह हरवक़त ख़ुदा ही से बातें करता है। कि हे ख़ुदा मैं तुझसे प्यार करता हूं और तेरी प्रसन्नता का इच्छुक हूँ। मुझ पर ऐसा फ़ज़ल कर कि मैं इस बिन्दु और स्थान तक पहुंच जाऊं जो तेरी प्रसन्नता का स्थान है। मुझे इस प्रकार के कर्मों की तौफ़ीक़ दे जो तेरी नज़र में प्रिय हों। दुनिया की आँख खोल कि वह तुझे पहचाने और तेरे आस्ताने पर गिरे। ये उसके विचार होते हैं और ये उसकी इच्छाएं। इस में ऐसा लीन और फ़ना होता है कि दूसरा उसको पहचान नहीं कर सकता। वह इस सिलसिला को आन्नद के साथ लम्बा करता है और फिर इस में इस स्थान तक पहुंच जाता है कि उसका दिल पिघल जाता है और उसकी रूह बह निकलती है। वे पूरे ज़ोर और ताक़त के साथ अल्लाह तआला के आस्ताना पर गिरता और،اَنْتَ رَبِّیْ اَنْتَ رَبِّیْ कह कर पुकारती है। तब अल्लाह तआला का फ़ज़ल और रहम जोश में आता है और वह इस को सम्बोधित करता और अपने कलाम से इसको उत्तर देता है। यह ऐसा आन्नददायक सिलसिला है कि हर व्यक्ति इसको समझ नहीं सकता और यह आन्नद ऐसा है कि शब्द उसको अदा नहीं कर सकते। अत: वह बार-बार प्यासा की तरह रबूबियत के दरवाज़े ही को खटकाता रहता है और वहां ही अपने लिए सुविधा तथा आराम पाता है। वह दुनिया में होता है परन्तु दुनिया से अलग होता है। वह दुनिया की किसी चीज़ का इच्छुक नहीं होता परन्तु दुनिया उसकी सेवक़ होती है और ख़ुदा तआला उसके क़दमों पर दुनिया को ला देता है।

यह है संक्षिप्त हक़ीक़त नबुव्वत के स्थान की। यहां कलाम नफ़सी के दोनों सिलसिले भस्म हो जाते हैं और तीसरा सिलसिला शुरू होता है। जिसका आदि और अन्त ख़ुदा ही होता है। उस वक़्त वह ख़ुदा के कलाम को समाहित करता है जिसमें

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 21 October 2021 Issue No.42

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

इस प्रकार के धुएं और अज़ग़ासे अलहाम नहीं होते जो नफ़्स-ए-कलाम में होते हैं। बल्कि वह दुनिया से सम्पूर्ण रूप से विच्छेद किए हुए होता है। जैसे एक नफ़सानी इच्छाओं का क़ैदी उच्च स्तर की प्रियतमा से सम्बन्ध पैदा करके ध्यान पूर्वक हो कर कल्पना करता है। और उसे नफ़सानी आन्नदों का चरम पाता है और कदापि नहीं चाहते कि किसी दूसरे को मिलें। इसी तरह पर नबी ख़ुदा तआला से अपने सम्बन्धों को यहां तक पहुँचाता है कि वह इस एक़ान्त और ख़लवत में किसी दूसरे का दख़ल हरगिज़ पसन्द नहीं करते। वह अपने महबूब से बात करते हैं और इसी में आन्नद तथा आरम पाते पाते हैं। वे एक दम के लिए भी इस एकान्त को छोड़ना पसन्द नहीं करते। परन्तु ख़ुदा तआला उन्हें दुनिया के सामने लाता है ताकि वे दुनिया का सुधार करें और ख़ुदा तआला को दिखाने का आईना ठहरें। नबी अपने आप एक लज़्ज़त और कैफ़ीयत पाता है और उसे ख़ुदा तआला ही में चाहता है। इससे अधिक में इस कैफ़ीयत को वर्णन नहीं कर सकता ;यद्यपि दिल इस लज़्ज़त से भरा हुआ है यद्यपि इस ज़िक्र की लम्बाई और भी आन्नद प्रदान करने वाली है। परन्तु वे शब्द कहाँ से लाऊँ जिस मैं उसको प्रकट कर सकूं।

क्या कारण है कि अंबिया बीवियां और बच्चे भी रखते हैं?

कुछ अज्ञान लोगों को यह शंका होती है कि जब कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम ऐसे अल्लाह तआला में लीन होते हैं और दुनिया और इस के आन्नदों से दूर भागते हैं,फिर इस का क्या कारण है कि वे बीवियां और बच्चे भी रखते हैं? ये लोग इतना नहीं समझते कि एक शख़्स तो इन बातों का ग़ुलाम और उन नश्वर लज़्ज़तों में लीन हो जाता है परन्तु यह गिरोह इन बातों से पवित्र होता है। ये चीज़ें उन के लिए केवल सेवक के तौर पर होती हैं ओर इस के इलावा अंबिया अलैहिमुस्सलाम हर प्रकार के सुधार के लिए आते हैं। अत: यदि वह बीवी बच्चे न रखते हों, तो इस पक्ष में सम्पूर्ण सुधार कैसे होता। इसीलिए मैं कहता हूँ कि ईसाई लोग व्यवहार के बारे में मसीह का क्या नमूना पेश कर सकते हैं? कुछ भी नहीं। जब वे इस मार्ग से अपरिचित हैं और उन मदारिज से अज्ञान हैं वे क्या सुधार करेंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही कमाल है कि हर पहलू में आपका नमूना कामिल है। दुनिया और इस की चीज़ें अंबिया अलैहिमुस्सालम पर कोई प्रभाव नहीं डालती हैं वे फ़ानी लज़्ज़तों की कुछ भी परवाह नहीं करते,बल्कि उनका दिल ख़ुदा तआला की तरफ़ दरिया की एक तेज़ धारी की तरह जो पहाड़ से गिरती है बहता है और इस के धार में सब घास पत्ते बह जाते है।

अत: अंबिया अलैहिमुस्सलाम इन चीज़ों के ग़ुलाम नहीं होते, बल्कि ये चीज़ें उन के लिए सेवक के रूप में होती हैं और उनके उच्च स्तर के आचरण की सम्पूर्णता का नमूना उनके इस ज़िक्र और ज़ौक़ में जो ख़ुदा तआला की कल्पना और लीनता में उन्हें मिलता है उनसे कुछ रोक पैदा नहीं होता। वे कुछ ऐसे लून और फ़ना होते हैं कि दुनिया से बिल्कुल अलग होते हैं। जब इस प्रकार की रबूदगी होती है तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ से आवाज़ें आने लगती हैं और वार्तालाप होते हैं। यह नियम की बात है कि जो जज़्ब की क़ुव्वत लेकर निकलती है वह दूसरे को जज़्ब करती है। इस जज़्ब में इतनी शक्ति होती है कि दुनिया और जो कुछ इस में है की सारी बातें इस में भस्म हो जाती हैं और वह ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल और फ़ैज़ को अपनी तरफ़ खींचने लगती है और इसी सिलसिला को बाक़ी समस्त सिलसिलों पर प्राथमिकता और फ़ौक़ हो जाती है। लेकिन इस के लिए सहीह कोशिश की ज़रूरत है। इस के बिना यह मार्ग नहीं खुलता। जैसा कि फ़रमाया है

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 328 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

मालूम हो गए और इस के नतीजा में दुनिया ने अबू बकर, उमर और उस्मान और अली रज़ि अल्लाहु अन्हो से अपने-अपने वक़्त में फ़ायदा उठाया। अगर सब ही पहले दिन मुस्लमान हो जाते तो सम्भव है पहली सियादत की वजह से लोग अबू बकर रज़ि अल्लाह अन्हो की जगह अबू जहल या वैसे ही किसी आदमी को अपना सरदार बना देते और उन फ़वायद से वंचित रह जाते जो अबू बकर इत्यादि ईमान पर कायम रहने वाले साहाब रज़ि अल्लाहो अन्हो से उनको पहुंचे। अलीम कह कर यह बताया कि जबकि इस हिक्मत की वजह से देर हुई है परन्तु इस से मायुस नहीं होना चाहिए ख़ुदा जो अलीम है तुम को बताता है कि आगे चलकर सब अरब इस दीन के उसूल पर जमा हो जाएगा। उख़रवी ज़िन्दगी की दृष्टि से यह बताया कि एक दिन सब अगले पिछले लोगो अल्लाह तआला के समक्ष जमा किए जाएंगे और अपने-अपने कर्मों का दंड पाएंगे। अत: वे आरम्भिक कष्ट जो मुस्लमानों को पहुंच रहें हैं उनका ख़्याल नहीं करना चाहिए न उन लोगों को नाकाम समझना चाहिए जो इस शैतानी और रहमानी जंग में फ़तह से पहले मारे जाएंगे क्योंकि असल दंड का दिन तो मरने के बाद आने वाला है और अल्लाह तआला की हिक्मत और इलम ने इस दुनिया को असल मरने का दिन नहीं बनाया।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 4 पृष्ठ 50 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

पृष्ठ 2 का शेष

आ जाती थी तो उस वक़्त आप कौन सी दुआएं किया करते थे? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए फ़रमाया:

उत्तर : कोई ख़ास दुआ नहीं होती थी, बस में तो सजदे में पड़ जाता था और अल्लाह तआला से कहता था कि मसला हल कर दे। बस नमाज़ और सजदा। नमाज़ में सजदे में अपनी ज़बान में दुआएं करें जो भी दुआएं करनी हैं। इन्सान अपनी ज़बान में जो दुआ करता है इस में ज़्यादा दर्द पैदा होती है। इसलिए बाक़ी दुआएं तो ठीक है करनी चाहिऐं, दुरूद शरीफ़ भी पढ़ना चाहिए, अस्तग़फ़ार भी पढ़ना चाहिए, लाहौल भी पढ़ना चाहिए, अस्तग़फ़ार करते हुए अपने गुनाहों से माफ़ी भी मांगनी चाहिए। लेकिन सबसे ज़्यादा बेहतर तरीक़ा यह है कि नमाज़ में सजदे में दुआएं करो। नफ़ल पढ़ो और नफ़्लों में, सुन्नतों में, फ़र्ज़ में अल्लाह तआला के आगे रो कर सजदे में अपनी भाषा में दुआ करो। अपनी ज़बान में जो दुआ होती है इस में ज़्यादा दर्द पैदा होती है और इस से मसले हल हो जाते हैं।

संकलनकर्ता : ज़हीर अहमद ख़ान, लंदन) (शेष.....................)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad